

भारत राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्रधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 1

No. 1]

नई दिल्ली, बुधवार, जनवरी 3, 2007/पौष 13, 1928

NEW DELHI, WEDNESDAY, JANUARY 3, 2007/PAUSA 13, 1928

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क विभाग)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 3 जनवरी, 2007

अंतिम जाँच परिणाम

विषय : चीन जन. गण. मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित सेकरिन के आयात के संबंध में पाटनरोधी जाँच-अंतिम जाँच परिणाम।

सं. 1/27/2004-डीसीएडी.- वर्ष 1995 में अथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे इसके द अधिनियम कहा गया है) और सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की प्रवृत्ति तथा उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण और क्षति का निर्धारण) नियमावली, 1995 (जिसे इसके बाद नियमावली कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए:

2. कि मे0 एस इंटर्प्राइजेज, मुम्बई, मे0 स्टावि प्रोडोकेम्स प्रा0 लि0, थाप्पे और मे0 श्री वर्धयात्री प्रिमिकल इंडस्ट्री कं0 लि0, गुजरात और ऑल इंडिया सेकरिन मैन्युफैक्चर्स एसोसिएशन, मुम्बई के उनके समर्थकों (जिन्हें इसके बाद आवेदक कहा गया है) ने वर्ष 1995 में अथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 और सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की प्रवृत्ति तथा उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण और क्षति का निर्धारण) नियमावली, 1995 (जिसे इसके बाद नियमावली कहा गया है) के अनुसार निहित प्राधिकारों (जिसे इसके बाद प्राधिकार कहा गया है) के समक्ष आवेदन-पत्र दायर किया है जिसे चीन जन. गण. (जिसे इसके बाद चीन कहा गया है) के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित सेकरिन (जिसे इसके बाद संबद्ध नाम प्राप्त हुआ है) का आयात अरोपित किया गया है और अनुषंग किया गया कि संबद्ध नाम पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण में पाटनरोधी जाँच आरंभ की जाए। प्राधिकारों ने उक्त नियमावली के दूरे के अनुबन्धन के अन्तर्गत होने के बारे में चीन जन. गण. से प्रतिक्रिया के लिए आग्रह किया है।

3. और जबकि प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की ओर से आवेदक द्वारा प्रस्तुत पर्याप्त साक्ष्य के आधार पर भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित दिनांक 4 जुलाई, 2005 की एक सार्वजनिक सूचना जारी की जिसके अनुसार उक्त नियमावली के नियम 6(1) के अनुसार संबद्ध देश के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध माल के आयातों के संबंध में पाटनरोधी जांच आरंभ की गई जिससे तथाकथित पाटन होने, उसकी मात्रा तथा प्रभाव का निर्धारण किया जा सके और इस बात की सिफारिश की जा सके कि क्या पाटनरोधी शुल्क की राशि यदि लगाई जाए तो क्या वह घरेलू उद्योग को हो रही क्षति को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगी।

4. और जबकि निर्दिष्ट प्राधिकारी ने दिनांक 01/04/2006 की अधिसूचना सं. 14/27/2004 डीजीएडी के द्वारा प्रारंभिक जांच परिणाम को अधिसूचित किया और चीन जन.गण. के मूल की अथवा वहां से निर्यातित सैकरिन के आयातों के संबंध में पाटनरोधी शुल्क लागू करने की सिफारिश की।

क. प्रारंभिक जांच परिणाम के पश्चात प्रक्रिया

5. प्राधिकारी द्वारा उपरोक्त जांच-प्रारंभ के बारे में अधिसूचित करते हुए सार्वजनिक सूचना जारी किए जाने के बाद इस जांच के संबंध में नीचे वर्णित प्रक्रिया अपनाई गई है :-

- (i) प्राधिकारी ने सभी ज्ञात हितबद्ध पक्षकारों को जो प्रारंभिक जांच परिणाम के संबंध में अपने विचार यदि कोई हों प्रस्तुत करने के इच्छुक थे, प्रारंभिक जांच परिणाम अधिसूचनाकी प्रतिलिपि भेजी, ताकि वे अधिसूचना के जारी होने के 40 दिनों के भीतर अपने विचार प्रस्तुत कर सकें।
- (ii) प्राधिकारी ने प्रारंभिक जांच परिणाम के संबंध में अपने विचार प्रस्तुत करने के अनुरोध के साथ नई दिल्ली में स्थित संबद्ध देश के दूतावास के प्रारंभिक जांच परिणाम की एक प्रति भी भित की।
- (iii) प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों के विचार जानने के लिए 14/06/2006 को सार्वजनिक सुनवाई का आयोजन किया। सार्वजनिक सुनवाई में हिस्सा लेने वाले पक्षकारों से निवेदन किए गए कि वे मौखिक रूप से व्यक्त विचारों को लिखित रूप में भी प्रस्तुत करें। निर्दिष्ट प्राधिकारी ने परिणामों में निवेदनों को प्राप्त दर्शाया है।
- (iv) प्राधिकारी ने प्रारंभिक जांच परिणाम के पश्चात विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दिए गए निवेदनों के संबंध में यह माना है कि निवेदनों में उन्होंने अपने संपूर्ण विचार व्यक्त किए।
- (v) प्राधिकारी ने आवश्यक समझी गई सीमा तक घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत सूचना का त्यापन किया है।
- (vi) प्राधिकारी ने आवश्यक समझी गई सीमा तक सहयोगी उत्पादकों/निर्यातकों तथा आप्रतकों द्वारा प्रस्तुत सूचना का भी सत्यापन किया है।
- (vii) वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डिजीसीआई एण्ड एस) से अनुरोध किया गया कि वे पिछले तीन वर्षों एवं जांच अवधि के लिए संबद्ध वस्तुओं के आयातों के बारे में उपलब्ध कराएं।
- (viii) प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्यों के अगोपनीय अंश तो एक सार्वजनिक फाइल (विधिवत सूचीबद्ध) के रूप में उपलब्ध कराया और उसे हितबद्ध पक्षकारों के निरीक्षण हेतु खुला रखा। फाइलों का निरीक्षण करने और रिकॉर्ड की प्रतिलिपि देने वा हितबद्ध पक्षकारों के संबंध में सूचना सार्वजनिक फाइल में रखी गई है।

- (ix) सामान्यतया स्वीकृत लेखा सिद्धांतों (जीएएपी) के आधार पर याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत जानकारी पर आधारित भारत में संबद्ध माल की अनुकूल उत्पादन-लागत, और विनिर्माण एवं बिक्री लागत की गणना की गई जिससे यह पता लगाया जा सके कि यदि पाटन मार्जिन से कम पाटनरोधी शुल्क लगाया जाता है तो क्या वह घरेलू उद्योग को हो रही क्षति को समाप्त करने हेतु पर्याप्त रहेगा।
- (x) उपर्युक्त नियमावली के नियम 16 के अनुसार इस जांच के लिए जिन आवश्यक तथ्यों/आधारों पर विचार किया जा रहा है उन्हें ज्ञात हितबद्ध पक्षकारों पर प्रकट किया गया और इस संबंध में उनसे प्राप्त टिप्पणियों पर भी इस जांच में उचित रूप से विचार किया जा रहा है।
- (xi) इस अधिसूचना में **** पर व्यक्त जानकारी याचिकाकर्ता द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत जानकारी को व्यक्त करती है और प्राधिकारी द्वारा उक्त नियमावली के तहत उसी पर विचार किया गया है।
- (xii) जांच दिनांक 1 जनवरी, 2004 से प्रारंभ 31 दिसम्बर, 2004 तक की अवधि (जांच अवधि) के लिए की गई। क्षति विश्लेषण के संदर्भ में रुझानों की जांच 1 अप्रैल, 2001 से 31 मार्च, 2004 और जांच अवधि के लिए की गई।

ख विचाराधीन उत्पाद

6. मौजूदा जांच में विचाराधीन उत्पाद सैकरिन है।

7. सैकरिन एक अपोषक मिठास है और इसे चीनी के कम कैलोरी वाला प्रतिस्थापन माना जाता है। सैकरिन का मूल रूप से तीन किस्मों का उत्पादन किया जाता है अर्थात् सोडियम सैकरिन, कैल्शियम सैकरिन और अघुलनशील सैकरिन। सैकरिन का उत्पादन दो नैसर्गिक रूपों अर्थात् दाना तथा पाउडर में होता है। दानेदार सोडियम सैकरिन का प्रयोग ऐसी स्थिति में किया जाता है जहां सैकरिन घुलनशील हो और पाउडर रूप जो पिसा हुआ हो अर जो स्रं झाइड हो, का प्रयोग झाई मिक्सिज तथा फार्मास्यूटिकल्स में किया जाता है। सैकरिन के अघुलनशील रूप का प्रयोग अनेक फार्मास्यूटिकल तथा मेडिकल अनुप्रयोगों में किया जाता है। यह पानी में थोड़ा घुलनशील होता है। सैकरिन चीनी की तुलना में 500 गुना से भी अधिक मीठा होता है। सैकरिन के सभी रूप मौजूदा जांच के दायरे में शामिल हैं।

8. सैकरिन का प्रयोग अनेक उद्योगों में होता है जैसे खाद्य तथा पेय, वैयक्तिक सावधानी वाले उत्पादों, टैबल टॉप स्वीटनर्स, इलेक्ट्रोप्लेटिंग ब्राइटनर्स तथा फार्मास्यूटिकल्स इत्यादि में।

9. सैकरिन का वर्गीकरण उपशीर्ष सं. 29251100 के तहत सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 के अध्याय 29 के तहत किया हुआ है। सीमाशुल्क वर्गीकरण केवल संकेतात्मक होता है और इसकी मौजूदा जांच के दायरे पर कोई बाध्यता नहीं है।

ख.1 समान वस्तु

10. घरेलू उद्योग ने दावा किया है कि उनके द्वारा उत्पादित माल संबद्ध देश के मूल के अथवा वहां से निर्यातित माल की 'समान वस्तु' है। घरेलू उद्योग सैकरिन का उसके सभी रूपों में उत्पादन कर रहा है। घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित माल और चीन से आयातित माल उसके नैसर्गिक रूप और रासायनिक

संघटन में तुलनीय हैं। चीन से आयातित सैकरिन और घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित सैकरिन तकनीकी एवं वाणिज्यिक दृष्टियों से प्रतिस्थापनीय हैं। घरेलू उद्योग ने यह भी दावा किया है कि सैकरिन के विनिर्माण के लिए चीन के उत्पादक सैकरिन के उत्पादन के लिए माउमिस प्रक्रिया अपनाते हैं जबकि भारतीय उत्पादक सोडियम डायक्रोमेट रूट अपनाते हैं लेकिन अंतिम उत्पाद में कोई अंतर नहीं है।

11. मै० कैफेंग जिंधुआ फाइन केमिकल फैक्ट्री चीन जन.गण. (जिंधुआ) ने कहा है कि कुछेक निश्चित प्रयोजनों हेतु भारतीय सैकरिन को प्रयोक्ता द्वारा और प्रसंस्कृत किए जाने की आवश्यकता होती है जिससे प्रयोक्ताओं के खर्च में वृद्धि होती है और उन्हें असुविधा होती है जबकि चीन के सैकरिन को बिना किसी अतिरिक्त प्रसंस्करण के बिना उपयोग में लाया जा सकता है। यह भी कहा गया है कि कई वर्षों से समान बाजार खण्डों में भारत एवं चीन के सैकरिन की प्रतिस्पर्धा नहीं हुई है।

12. मै० तियानजिन चांगजाई केमिकल कं.लि. चीन जन.गण. (चांगजाई) ने कहा है कि उन्होंने जांच अवधि के दौरान भारत को सोडियम सैकरिन की बिक्री की है तथा जांच अवधि के दौरान याचिकाकर्ता द्वारा भारत में सोडियम सैकरिन का उत्पादन अथवा बिक्री नहीं की गई थी।

13. मै० शंघाई फॉर्च्यून केमिकल्स कं.लि. शंघाई (एसएफसी) के कहा है कि वे केवल भारतीय बाजार में सोडियम सैकरिन की बिक्री कर रहे हैं।

14. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित सैकरिन और चीन से आयातित सैकरिन परस्पर तुलनीय हैं। विलेय एवं अविलेय सैकरिन में जल की मात्रा भिन्न-भिन्न रेंजों में है। अविलेय सैकरिन में जल की मात्रा न्यूनतम है तथा चीन से आयातित उत्पाद और घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित माल में कोई अंतर नहीं है। घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित उत्पाद और संबद्ध देश से आयातित उत्पाद चूंकि सभी आवश्यक विशेषताओं में एकसमान हैं और वे वाणिज्यिक एवं तकनीकी दोनों दृष्टियों से प्रतिस्थापनीय हैं, अतः उन्हें उपरोक्त नियमावली के नियम 2(घ) के आशय के भीतर समान वस्तुएं माना जाता है।

ग. घरेलू उद्योग की स्थिति और जांच की शुरुआत

15. उक्त आवेदन-पत्र मै० ए एस इंटरप्राइजेज, मुम्बई, मै० स्वाति पेट्रोकेमिकल्स प्रा०लि०, थाणे और मै० श्री वर्धयानी केमिकल इंडस्ट्री कं०लि०, गुजरात और ऑल इंडिया सैकरिन मैन्यूफैक्चरर्स एसोसिएशन, मुम्बई के उनके प्रतिनिधि समर्थकों द्वारा दायर किया गया जो भारत में संबद्ध माल के उत्पादक हैं। आवेदकों तथा उनके समर्थकों का भारत में संबद्ध माल के उत्पादन का याचिकाकर्ता के पास आवश्यक अर्हता है और वह भारतीय पाटनरोधी नियमावली के आशय के भीतर घरेलू उद्योग है।

16. प्रारंभिक जांच परिणामों के पश्चात हितबद्ध पक्षकारों ने यह प्रश्न उठाया था कि प्रमुख उत्पादकों में से एक मै० विष्णु केमिकल्स लि०, हैदराबाद ने जांच में भाग नहीं लिया था इसलिए अर्हता हेतु परिकलन सत्य नहीं है। इस संबंध में प्राधिकारी ने जांच की शुरुआत करने से पहले मै० विष्णु केमिकल्स लि० के उत्पादन संबंधी आंकड़ों की मांग की थी तथा इसके उत्पादन संबंधी आंकड़ों पर 'अर्हता' के परिकलन हेतु विचार किया गया था। इसलिए प्राधिकारी मानते हैं कि पाटनरोधी नियमावली

के अर्थ के भीतर याचिकाकर्ता के पास आवश्यक अर्हता है। (प्रारंभिक जांच परिणामों के पश्चात मै0 विष्णु केमिकल्स लि0 ने जांच में भाग लिया था तथा सूचना उपलब्ध कराई थी।

17. चेंगज़ि तथा जिगहुआ द्वारा यह दलील भी दी गई थी कि चीनी सेकरिन भिन्न-भिन्न बाजार खण्ड को दी जा रही है इसलिए खण्ड-वार अर्हता का परिकलन किया जाना चाहिए। प्राधिकारी को इस तर्क में कोई दम नहीं पाते क्योंकि विलेय तथा अविलय सेकरिन को वितरण के एक ही मार्ग के जरिए बिना पृथक्करण के उसी बाजार में बेचा जा रहा है।

गोपनीयता

18. प्राधिकारी ने सभी हितबद्ध पक्षकारों की लागत तथा कीमत से संबंधित आंकड़ों को गोपनीय मानते हुए इन पर गौर किया था क्योंकि इससे उनके प्रतिस्पर्धियों को प्रतिस्पर्धा लाभ प्राप्त होगा। दूसरी सूचनाओं को गोपनीय नहीं माना गया था बशर्ते प्रत्युत्तरदाता पक्षकार ने इस सूचना को गोपनीय रखने के लिए पर्याप्त औचित्य न बताया हो। हितबद्ध पक्षकारों ने दूसरे हितबद्ध पक्षकार के गोपनीय लागत आंकड़ों के सारांश की अनुपस्थिति पर आपत्ति जताई थी। हालांकि प्राधिकारी पाते हैं कि हितबद्ध पक्षकारों में से किसी ने भी गोपनीय लागत आंकड़ों के पर्याप्त सारांश उपलब्ध नहीं कराए हैं तथा यह औचित्य बताया था कि ऐसे आंकड़ों का सारांश उपलब्ध कराना संभव नहीं है। प्राधिकारी ने लागत तथा बिक्री संबंधी आंकड़ों को गोपनीय माना था तथा इस संबंध में सभी हितबद्ध पक्षकारों के रुख को स्वीकार किया था।

घ. पाटन मार्जिन की गणना पद्धति और बाजार अर्थव्यवस्था की जांच

घ.1 घरेलू उद्योग के विचार

19. घरेलू उद्योग ने निवेदन किया कि चीन एक गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश है। चीन को दिगत तीन वर्षों में यूरोपीय आयोग तथा संयुक्त राज्य अमरीका द्वारा गैर-बाजार अर्थव्यवस्था का व्यवहार दिया गया है। भारत में निर्दिष्ट प्राधिकारी ने चीन को दिनांक 31.5.2002 के संशोधन के बाद की गई सभी जांचों में व्यावहारिक रूप से गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माना है। अतः चीन एक गैर-अर्थव्यवस्था वाला देश है और चीन के उत्पादकों को बाजार अर्थव्यवस्था के दर्जे का व्यवहार नहीं दिया जा सकता।

घ.2 उत्पादकों/निर्यातकों द्वारा किए गए निवेदन

घ.2.1 मै0 शंघाई फार्चून केमिकल्स कं0लि0 (विनिर्माता) चीन जन.गण. और मै0 मैजेस्टिक इंटरनेशनल ट्रेडिंग कं.लि. (निर्यातक), हांगकांग के निवेदन

20. ऊपर उल्लिखित उत्पादक तथा निर्यातक ने कहा कि मै0 शंघाई फार्चून केमिकल्स कं.लि. एक लिमिटेड कम्पनी है जिसमें हांगकांग में निगमित कम्पनी अर्थात् फॉर्चून निटिंग कम्पनी अर्थात् फॉर्चून निटिंग कम्पनी लिमिटेड का 100% स्वामित्व है। इस कम्पनी का कोई भी शेयरधारक चीन का राष्ट्रिक नहीं है। उन्होंने आगे यह भी कहा कि इस कम्पनी की संपूर्ण पूंजी हांगकांग में सूचीबद्ध किसी विदेशी

कम्पनी की है और उसका विनियमन और संचालन चीन जन.गण. के कम्पनी कानून, श्रमिक कानून और पूर्णतया विदेशी स्वामित्व वाले उद्यमों संबंधी कानून तथा लेखा कानून, श्रमिक कानून और पूर्णतया विदेशी स्वामित्व वाले उद्यमों संबंधी कानून तथा लेखा कानून द्वारा होता है। उन्होंने यह भी कहा है कि कम्पनी द्वारा खरीदे गए कच्चे माल से बाजार कीमतें परिलक्षित होती हैं और उन पर सरकारी हस्तक्षेप/दिशा-निर्देश/संचालन से कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता है। वे कहते हैं कि मै0 शंघाई फार्चून केमिकल्स कं0 लि0 अपना कारोबार स्वतंत्र रूप से चला रहा है और अपने उत्पादन तथा बिक्रियों को बाजार की गतिविधि के अनुसार कर रहा है और बिक्री कीमतों के निर्धारण अथवा खरीदी जाने वाली मात्राओं के निर्धारण में उन पर किसी भी सरकारी अथवा स्थानीय प्राधिकारी का कोई हस्तक्षेप नहीं है।

21. डब्ल्यूटीओ के लिए चीन के पहुँच नयाचार से अपने उत्पादन के लिए सैकरिन अथवा उसके कच्चे माल का ऐसा संकेत नहीं मिलता है जो कीमत नियंत्रण के अधधीन हों। मै0 शंघाई फार्चून केमिकल्स कं0 लि0 का विनियमन एवं संचालन कम्पनी के लिए लागू दिवालिएपन तथा संपदा कानून सहित सभी कानूनों द्वारा होता है। इस कम्पनी तथा उसके कारोबारी क्षेत्र को कोई विशेष छूट नहीं मिली हुई है।

22. सैकरिन के उत्पादन पर नियंत्रण के संबंध में यह बात स्वीकार की गई है कि चीन में सरकार द्वारा सैकरिन पर उत्पादन की क्वालिटी सुनिश्चित की जा सके क्योंकि इसका प्रयोग खाद्य पदार्थों के लिए किया जाता है। आगे यह भी कहा गया है कि ऐसे प्रतिबंधों से बाजार हस्तक्षेप नहीं होता है। सैकरिन के उत्पादन पर चीन के नियंत्रण का आशय मूल रूप से यह है कि ऐसे सैकरिन का अनधिकृत प्रयोग को नियंत्रित किया जाए जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हों। यह भी कहा गया है कि सैकरिन पर विनियमन स्वास्थ्य मंत्रालय तथा एसईटीसी द्वारा संयुक्त रूप से जारी किए गए हैं। अतः इन विनियमनों को सरकारी हस्तक्षेप नहीं माना जाए जिससे उद्योग को गैर-बाजार दशाओं में कार्यचालन करना पड़े।

घ.2.2 मै0 काइफेंग जिगहुआ फाइन केमिकल फैक्टरी (जिगहुआ) का निवेदन

23. जिगहुआ एक सरकारी स्वामित्व वाला उद्यम है जिसमें काइफेंग नगर सरकार का चीन के लोगों की ओर से 100% शेयरधारण होता है। इसका संचालन संपूर्ण जनता और आर्डिनेंस ऑफ वर्कर्स रिप्रेजेंटेटिव कांग्रेस ऑफ इंडस्ट्रियल इंटरप्राइज ऑफ ऑनरशिप द्वारा स्वामित्वाधीन औद्योगिक उद्यमों संबंधी चीन जन.गण. के कानून द्वारा होता है। उन पर कम्पनी कानून लागू नहीं होता है।

24. सैकरिन के विनिर्माण के लिए कच्चे माल तथा अन्य निविष्टियों की खरीद खुले बाजार से की जाती है और संबंधित दरें बातचीत से होती हैं जिनमें घाटबढ़ होती है। वे यह भी कहते हैं कि 'चूंकि सैकरिन उद्योग गंभीर प्रदूषण के किरम का होता है अतः सरकार के लिए यह आवश्यक होता है कि वह कुछ ऐसे उपाय करें जिससे पर्यावरण संरक्षण के प्रयोजनार्थ सैकरिन उत्पादकों का मार्गदर्शन हो सके। सैकरिन उत्पादन, मात्रा तथा बिक्री मूल्यों का निर्धारण स्वतंत्र रूप से कर सकते हैं।'

25. लेखा सिद्धांतों का संचालन चीन जन.गण. के लेखा कानून द्वारा होता है जो नेशनल पीपुल्स कांग्रेस की स्थायी समिति द्वारा जारी किया जाता है और वित्त मंत्रालय द्वारा जारी व्यवसाय उद्यम लेखा

प्रणाली द्वारा किया जाता है। लाभ वितरण के संबंध में उन्होंने कहा है कि जिंघुआ अपने लाभ का 10% भाग अपने सांविधिक सामान्य कल्याण निधि को आबंटित करता है। शेष 80% भाग अवितरित रहता है। यह लेखा जाए कि लाभ वितरण का निर्धारण स्वयं जिंघुआ द्वारा किया जाता है और उसमें कोई सरकारी नियंत्रण शामिल नहीं होता है।¹ दिवालिपन तथा संपदा कानून के संबंध में उनका कहना है कि जिंघुआ पर लॉ ऑफ पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना इंटरप्राइज बैक्सी लागू होता है।

घ.2.3 मै0 तियांजिन चेंगजि केमिकल कं० लि० (चेंगजि) के निवेदन

26. चेंगजि कहता है कि वह एक चीन की विदेशी संयुक्त उद्यम कम्पनी है जो चाइनीज फॉरेन इक्विटी ज्वाइंट वेंचर्स साइंस एंड टेक्नोलॉजी ग्रुप कम्पनी (चीन की वेंचरिंग कम्पनी लि० (हांगकांग कम्पनी) के स्वामित्वाधीन है।

27. सैकरिन के विनिर्माण के सभी कच्चे माल तथा निविष्टियों की मदद पहले बाजार से की जाती है और उसकी दरें बातचीत से तय होती हैं जिनमें घटबढ़ होती रहती है।

28. चेंगजि द्वारा प्रयुक्त लेखा सिद्धांत तथा पद्धतियों का संचालन जन.गण. के लेखा कानून द्वारा किया जाता है जो नेशनल पीपुल्स कांग्रेस की स्थाई समिति द्वारा जा किया जाता है और वित्त मंत्रालय द्वारा जारी व्यवसाय उद्यम लेखा प्रणाली द्वारा किया जाता है।

29. लाभ वितरण के संबंध में उनका कहना है कि 'चेंगजि का' के अनुसार आरक्षित निधि, उद्यम विकास निधि तथा कर्मचारी प्रोत्साहन एवं कल्याण निधि को वास ले लेगा। ये निधियां कानून के अनुसार चेंगजि द्वारा आयकर के भुगतान के बाद लाभ राशि से ली जाती है और वापस लिए जाने वाले प्रतिशत का निर्धारण बोर्ड द्वारा किया जाता है। यह देखा जाए कि लाभ वितरण का निर्णय चेंगजि द्वारा स्वयं लिया जाएगा और इसमें कोई भी सरकारी नियंत्रण शामिल नहीं होता है।¹

घ.3 प्राधिकारी द्वारा बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार प्रश्नावली 1 प्रत्युत्तर की जांच

30. प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य के आकलन के प्रयोजना पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध -1 के पैरा 8(2) के अनुसार इस पूर्वानुमान से कार्यवाही की कि किसी भी देश को निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा अथवा जांच से पहले की 3 वर्षों की अवधि के दौरान किसी भी डब्ल्यूटीओ सदस्य देश के सक्षम प्राधिकारी द्वारा पाटनरोधी जांच के प्रयोजना गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माना है। पिछले तीन वर्षों में चीन जन.गण. को ईयू तथा संयुक्त राज्य अमरीका जैसे डब्ल्यूटीओ सदस्यों द्वारा अपनी पाटनरोधी जांचों में चीन को एक गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माना है। मौजूदा मामले में चीन जन.गण. की गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देश के रूप में जांच किए जाने का प्रस्ताव है।

31. यथासंशोधित पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध -1 के पैराग्राफ 8 के अनुसार गैर-बाजार अर्थव्यवस्था की धारणा का तब खंडन किया जा सकता है यदि पैराग्राफ 8 के उप-पैरा (3) में निर्धारित मानदंडों के आधार पर चीन के निर्यातक जानकारी तथा पर्याप्त साक्ष्य उपलब्ध करा दें और इस बात का खंडन साबित कर दें। चीन जन.गण. के संबद्ध माल के सहयोगकारी निर्यातकों/उत्पादकों से अपेक्षा है

कि वे प्राधिकारी द्वारा निम्नलिखित मानदंडों पर विचार किए जाने हेतु बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार प्रश्नावली के पैराग्राफ 8 के उप पैरा (3) में यथा उल्लिखित आवश्यक जानकारी/पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत कर दें कि क्या :-

(क) कच्चे माल सहित कीमतों, लागतों तथा निविष्टियों, प्रौद्योगिकी एवं श्रम लागत, उत्पादन, बिक्रियों तथा पूंजी निवेश के संबंध में चीन जन.गण. की संबंधित फर्मों का निर्णय उन बाजार संकेतकों के प्रत्युत्तर में किए जाते हैं जो सप्लाई तथा मांग को परिलक्षित करते हों और उसमें इस संबंध में पर्याप्त सरकारी हस्तक्षेप नहीं हो और यह भी कि क्या प्रमुख निविष्टियों की लागतें बाजार मूल्यों का काफी परिलक्षित करती हैं;

(ख) ऐसी फर्मों की उत्पादन लागतें तथा वित्तीय स्थिति वतगत गैर-बाजार अर्थ-व्यवस्था प्रणाली से प्राप्त गतिरोधों के अध्यधीन होती हैं, विशेषरूप से परिसंपत्तियों के ह्रास, अन्य निपटानों, वस्तु विनिमय व्यापार तथा ऋण मुआवजों के जरिए भुगतान के संबंध में;

(ग) ऐसी फर्मों दिवालियपन तथा संपदा कानूनों के अध्यधीन हैं जिनमें उन फर्मों के कार्यचालन के लिए कानूनी निश्चितता एवं स्थायित्व की गारंटी मिलती हो; और

(घ) विनिमय दर परिवर्तन बाजार दर के अनुसार किए जाते हैं ।

32. प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य के निर्धारण के प्रयोजनार्थ सभी ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावली की प्रतियां भेजी । प्रत्युत्तर तीन उत्पादकों तथा संबंधित निर्यातक से प्राप्त हुए हैं और उन्होंने बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार (एमईटी) का दावा किया है । प्रश्नावली की प्रत्युत्तर जानकारी निम्नलिखित उत्पादकों/निर्यातकों द्वारा दायर की गई :-

1. मै0 शंघाई फार्चून केमिकल्स कं.लि. चीन जन.गण. और मै0 मैजेस्टिक इंटरनेशनल ट्रेडिंग कं0लि0, हांगकांग
2. मै0 काइफेंग जिंगहुआ फाइन केमिकल फैक्टरी, चीन जन.गण.
3. मै0 तियानजिन चेंगजि केमिकल कं0लि0, चीन जन.गण.

33. प्राधिकारी नोट करते हैं कि मै0 मैजेस्टिक इंटरनेशनल ट्रेडिंग कं.लि. (मैजेस्टिक) एक निजी कम्पनी है जिसको स्थापना हांगकांग के कम्पनी अधिनियम के तहत हुई है । इसका स्वामित्व हांगकांग के एक राष्ट्रिक तथा हांगकांग में निगमित एक कम्पनी - मै0 फार्चून निटिंग जो बारी-बारी से छह निजी वैयक्तिकों के स्वामित्व में है, के पास है । मैजेस्टिक एक व्यापारिक कम्पनी है जो रसायनों तथा अनेक गृहोपयोगी मर्दों की खरीद/आयात तथा निर्यात करती है । वे एक संबंधित कम्पनी मै0 शंघाई फार्चून केमिकल कं.लि. चीन जन.गण. से सेकरिन की खरीद कर रहे थे तथा भारत एवं अन्य देशों को इसका निर्यात कर रहे थे । मैजेस्टिक सेकरिन के विनिर्माण के लिए कच्चे माल की खरीद भी करती है । यह भी नोट किया गया था कि घरेलू बाजार में मैजेस्टिक द्वारा सेकरिन की कोई बिक्री नहीं की गई थी ।

34. मैसर्स शंघई फॉर्चून कैमिकल कं. लि. (एसएफसी) की स्थापना वर्ष 1988 में एक राज्य स्वामित्व वाली उद्यम, जो (अल्पांश) अशुद्ध है और फॉर्चून निटिंग, जो (अधिकांश) अशुद्ध है, के बीच संयुक्त उद्यम के रूप में की गई थी। फॉर्चून निटिंग, एक हांगकांग स्थित विदेशी कम्पनी थी जिसका संचालन कनैडियन राष्ट्र द्वारा किया जाता है। संयुक्त उद्यम संबंधी करार के अनुसार राज्य स्वामित्व वाली उद्यम ने भवन और औजार के रूप में पूंजी की भागीदारी की है जबकि फॉर्चून निटिंग कम्पनी ने नकद रूप में पूंजी की भागीदारी की है। मूल्यांकन प्रयोजनार्थ, दोनों कम्पनियों ने लेखा फर्मा की सेवाएं ली। संयुक्त उद्यम संबंधी करार के अनुसार, संयुक्त उद्यम विदेशी साझेदार द्वारा उत्पादन का अधिकांश भाग विदेशी बाजारों में बेचा जाना था। संयुक्त उद्यम संबंधी करार में 1996 में उस समय परिवर्तन किया गया था जब मैसर्स फॉर्चून निटिंग ने राज्य स्वामित्व वाली उद्यम के शेयर खरीदे थे। यद्यपि कम्पनी हानि में चल रही थी तब भी फॉर्चून निटिंग ने वार्ताकारी व्यवस्था के अनुसार राज्य स्वामित्व वाली उद्यम को ऊंची कीमत अदा की थी। वर्ष 1996 से एसएफसी के पास कोई सरकारी जमा पूंजी नहीं थी। वर्ष 2004 में एसएफसी ने केन्द्र सरकार से पट्टा आधार पर भूमि का अधिग्रहण किया था जबकि इससे पहले स्थानीय सरकार के उपयोग आने वाली भूमि के लिए किराया दिया जाता था।

35. यह नोट किया गया था कि चीन जनवादी गणराज्य सैकरिन के समूचे उत्पादन पर नियंत्रण है। यह नियंत्रण निर्यात एवं घरेलू बिक्रियों के लिए उत्पादन एवं कोटे के आबंटन के रूप में था। प्रति वर्ष, आर्थिक एवं व्यापार आयोग या राष्ट्रीय विकास एवं सुधार आयोग ने प्रत्येक सैकरिन उत्पादक को उत्पादन कोटा जारी करता रहा है। प्रत्येक माह सैकरिन उत्पादकों को चीन अपनी उत्पादन मात्रा चीनी एसोसिएशन को प्रस्तुत करनी चाहिए। प्रत्येक वर्ष के अंत में चीनी एसोसिएशन सैकरिन की पूरे वर्ष के उत्पादन का सत्यापन करते हैं। यदि कोई उद्यमी नियमित कोटे से ज्यादा सैकरिन का उत्पादन करता है तो चीनी एसोसिएशन स्थानीय आर्थिक एवं व्यापार आयोग और राज्य आर्थिक और व्यापार आयोग को मामले की रिपोर्ट करेगा कि वे स्थानीय सरकार के माध्यम से उस उद्यमी के खिलाफ कार्रवाई करें। निर्यात कोटा का निश्चय करने के लिए चाइना चैम्बर ऑफ कामर्स एंड मैडिसिन एंड हेल्थ प्रोडक्ट्स आयातक एवं निर्यातक उत्तरदायी हैं। प्रत्येक निर्यात बिक्रियों के लिए सैकरिन निर्यातक द्वारा चैम्बर को निर्यात संविदे भेजे जाने चाहिए, चैम्बर उसका उत्पादन करेगा और संविदे पर हस्ताक्षर करेगा। उसके पश्चात निर्यातक चीन सीमाशुल्क अधिकारियों को अपने माल की घोषणा करेगा।

36. एसएफसी द्वारा यह उल्लेख किया गया था कि वे प्रत्येक वर्ष घरेलू कोटा बिक्री को बढ़ा रहे थे और एसएफसी के खिलाफ इस संबंध में कोई दण्डात्मक कार्रवाई नहीं की गई थी। एसएफसी के अनुसार उत्पादन कोटा प्रणाली को कभी भी नियंत्रित उत्पादन के रूप में नहीं समझा गया था। लेकिन ये प्राकृतिक रूप में प्रदूषण नियंत्रण पर काबू पाने की दृष्टि से संकेतात्मक थे। यह भी उल्लेख किया गया था कि कोटा प्रणाली उस कीमत को नियंत्रण में नहीं रख पाई जिस कीमत पर उत्पाद को बेचा जा सके। इस संबंध में, प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्ष 2000 में एसएफसी ने घरेलू बाजार में आबंटित कोटा से ज्यादा बेचा था और इस संबंध में केन्द्र सरकार द्वारा विनियोजित राजस्व के रूप में कुछ दण्ड अदा किया था। यह भी नोटिस किया गया था कि राज्य सरकार ने सैकरिन के निर्यात पर प्रतिबंध नहीं लगाया है अतः योजना बद्ध लक्ष्य से ज्यादा किए गए निर्यात को राज्य आर्थिक एवं व्यापार आयोग द्वारा अनुमोदित किया जाना चाहिए।

37. प्रमुख कच्ची सामग्रियों में से एक कच्ची सामग्री पथैलिक सनीहाइड्राइट (पीएएनर) का अंशत आयात मैसर्स मजैस्टिक इंटरनोनल के जरिए जापान से किया गया था और अंशतः खरीद घरेलू बाजार से की गई थी। यह भी नोट किया गया था कि पीएएन को घरेलू सीमित देयता वाली कम्पनियों सिनो-विदेशी संयुक्त उद्यम कम्पनियों और पूणे राज्य स्वामित्व वाली कम्पनियों से भी प्राप्त किया गया था। घरेलू देयता कम्पनी और सिनो संयुक्त उद्यम कम्पनी और विदेशी कम्पनियों की खरीद कीमतें चालू बाजार कीमतों को प्रदर्शित करने वाली कीमते एक ही पाई गई थी। अन्य कच्ची सामग्री अमोनिया वॉटर तीन भिन्न-भिन्न घरेलू देयता कम्पनियों से खरीदी हुई प्रदर्शित की गई है जो तुलनात्मक कीमतें दर्शाती है। इसी तरह से, कॉपर सल्फेट की खरीद को दो भिन्न-भिन्न आपूर्तिकर्ताओं से खरीदे हुए दर्शाए गए हैं जो तुलनात्मक कीमतें दर्शाती हैं।

38. बिजली जैसी उपयोगिताएं टैरिफ ढांचा के अनुसार खरीद हुई दर्शाई गई है।

39. यह नोटिस किया गया था कि शंघाई से सैकरिन की खरीद से मजैस्टिक हानि में चल रहा था।

घ.3.3 मैसर्स कैफैंग जिंगुआ फाइन कॅमिकल फैक्टरी

40. यह नोट किया गया था कि जांच अवधि के दौरान कैफैंग जिंगुआ फाइन कॅमिकल फैक्टरी (जिगुआ) का स्वामित्व जाता था। तदनुसार 2005 में स्वामित्व में परिवर्तन आया था और इसको एक समूह द्वारा संभाला गया था। कम्पनी की स्थापना मूलतः चीन जनवादी गणराज्य के इंटरप्राइज लीगल पर्सन रजिस्ट्रेशन के अनुसार की गई थी ताकि साम्यवादी बाजार अर्थव्यवस्था का विकास किया जा सके और इसलिए यह चीन की जनता के स्वामित्व की है। अपनी जनता के स्वामित्व के औद्योगिक उद्यमों के संबंध में चीन जन.गण. के कानून तथा जन संबंध से संबंधित औद्योगिक उद्यमों के कामगार प्रतिनिधि संगठन के अध्यादेश के अनुसार जिगुआ में मूल पद्धति लोकतंत्रात्मक प्रबंध है जिसमें निदेशक मंडलों के स्थान पर कामगार प्रतिनिधि होते हैं। यह संगठन सभी कर्मचारियों तथा कामगारों के हितों का प्रतिनिधित्व करता है और उस उद्यम पर लोकतंत्रात्मक प्रबंध की शक्ति का उपयोग करने के उद्देश्य से कर्मचारियों एवं कामगारों हेतु एक मंच का कार्य करता है।

41. यह नोट किया गया था कि औद्योगिक उद्यमों के संबंध में चीन जन.गण. के कानून के अध्याय IV के अनुसार फैक्टरी निदेशक का चयन सरकारी विभाग द्वारा किया गया था और वह उद्यम का विधिक प्रतिनिधि था। निदेशक उद्यम के उत्पादन, संचालन और प्रबंधन पर नियंत्रण करता था। यह भी नोट किया गया था कि उद्यम राज्य प्लान के दिशा-निर्देशों के तहत कार्य कर रहा था और समाज द्वारा आवश्यकतानुसार उत्पाद के उत्पादन की व्यवस्था करना था।

42. यह नोट किया गया था कि चीन जन.गण. में सैकरिन पर समग्र उत्पादन नियंत्रण है। यह नियंत्रण उत्पादन तथा निर्यात एवं घरेलू बिक्री के लिए कोटा के आबंटन के रूप में है। प्रति वर्ष स्टेट इकॉनामी तथा व्यापार आयोग अथवा राष्ट्रीय विकास एवं सुधार आयोग प्रत्येक सैकरिन उत्पाद के लिए उत्पादन कोटा जारी करता है। प्रत्येक माह सैकरिन उत्पादक चीनी एसोसिएशन को अपनी उत्पादन मात्रा प्रस्तुत करना चाहिए। प्रत्येक वर्ष के अन्त में चीनी एसोसिएशन सैकरिन के वार्षिक उत्पादन का सत्यापन करेंगे। यदि कोई उद्यम उसे आबद्ध कोटे से अधिक सैकरिन का उत्पादन करता है तब चीनी

एसोसिएशन इस मामले को स्थानीय इकोनॉमी तथा व्यापार आयोग को सूचित करेंगे तथा स्टेट इकोनॉमी एवं व्यापार आयोग स्थानीय सरकार के जरिए उद्यम के विरुद्ध कार्रवाई करेंगे। निर्यात कोटाओं की निगरानी करने के लिए चीनी वाणिज्य मण्डल तथा चिकित्सा एवं स्वास्थ्य उत्पाद आयातक एवं निर्यातक उत्तरदायी हैं। प्रत्येक निर्यात बिक्री के लिए सेकरिन निर्यातक का मण्डल को निर्यात संविदा भेजनी चाहिए; मण्डल इसका सत्यापन करेंगे तथा संविदा पर हस्ताक्षर करेगा। इसके पश्चात निर्यातक चीनी सीमाशुल्क का अपने माल की घोषणा कर सकेगा।

43. कच्चे माल के संबंध में यह नोट किया गया था कि प्रमुख कच्चे माल में से एक अर्थात् फाथेलिक एनहाइड्राइट तथा कुछ अन्य कच्चे मालों को निजी कम्पनी से खरीदा गया था जबकि दूसरी कच्ची सामग्री को राज्य के स्वामित्व वाले उद्यमों से खरीदा गया था। तथापि, राज्य के स्वामित्व वाले उद्यमों से खरीदी गई कच्ची सामग्री की अन्य कम्पनियों से कच्ची सामग्री से यह स्थापित करने के लिए तुलना नहीं की जा सकती कि खरीद बाजार दशाओं के अनुरूप की गई थी। प्रमुख कच्ची सामग्री में से एक कॉपर सल्फेट की खरीद राज्य के स्वामित्व वाले उद्यम से पाई गई थी तथा यह व्याख्या की गई थी कि कम्पनी का इस क्षेत्र में उत्पाद की बिक्री करने में एकाधिकार है।

44. यह नोट किया गया था कि बिजली तथा पानी की खरीद राज्य के स्वामित्व वाले उद्यम से की गई थी जिसमें राज्य का एकाधिकार है।

घ.3.3 मै0 टियानजिन चेंगजि केमिकल कं.लि.

45. यह नोट किया गया था कि टियानजिन चेंगजि केमिकल कं.लि. (चेंगजि) की स्थापना एक संयुक्त उद्यम कम्पनी के रूप में समग्र रूप से स्वामित्व उद्यम तथा जियांगगेंग जिलियन ट्रेड कं.लि. के बीच की गई थी। 2001 में जेवी करार समग्र रूप से स्वामित्व उद्यम के साथ टियानजिन संक्विन साइंस एंड टेक्नोलाजी ग्रुप कं. (टीएसएसटीजीसी) का श्रम प्रतिस्थापित कर पुनः लिखा गया था। 2004 में टीएसएसटीजीसी का टियानजिन संक्विन ग्रुप कं. के रूप में पुनः नामकरण किया गया था।

46. यह भी नोट किया गया था टीएसएसटीजीसी की स्थापना 1998 में की गई थी। जिसमें बहुत उच्च प्रतिशत के शेयर वाली समग्र स्वामित्व वाली कम्पनी तथा तुलनीय शेयरहोल्डिंग वाली औद्योगिक कम्पनी के शेयर हैं। 2003 तथा 2004 में 4 व्यक्तियों ने 100% टीएसएसटीजीसी शेयरों की खरीद की। यह सूचित किया गया था कि ये चार व्यक्ति टीएसएसटीजीसी में उच्चाधिकारी थे तथा वे चार व्यक्तियों एवं टीएसएसटीजीसी के बीच संविदा के अनुरूप अर्जित बोनस के कारण कम्पनी को खरीद सकते थे। यह भी सूचित किया गया था कि वे चार व्यक्ति चेंगजि के निदेशक मण्डल में कभी नहीं रहे थे। यह भी नोट किया गया था कि चार व्यक्तियों तथा टीएसएसटीजीसी के बीच ऐसी संविदा को दर्शाने के लिए कोई दस्तावेज उपलब्ध नहीं था। यह भी नोट किया गया था कि कम्पनी के प्रबंधन में ऐसा कोई परिवर्तन नहीं हुआ था जिससे 2003 तथा 2004 में स्वामित्व में परिवर्तन का पता चल सके।

47. यह भी नोट किया गया था प्रमुख कच्ची सामग्रियां जैसे पेट्रोजिक एनहाइड्राइट, सल्फ्यूरिक अम्ल और द्रवीय क्लोरीन को राज्य के स्वामित्व वाले उद्यमों या संयुक्त उद्यम कम्पनियों से खरीदा गया था और उसी कच्ची सामग्री की बिक्री करने वाली निजी कम्पनी के साथ इसकी कीमतों की तुलना नहीं

की जा सकती। बिजली तथा पानी राज्य के स्वामित्व वाले उद्यमों द्वारा उपलब्ध कराया जाता तथा यह सूचना दी गई थी कि राज्य का इन क्षेत्रों में एकाधिकार है।

48. यह नोट किया गया था कि चीन जन.गण. में सेकरिन पर समग्र उत्पाद नियंत्रण है। यह नियंत्रण उत्पादन और निर्यात एवं घरेलू बिक्री हेतु कोटा के आबंटन के रूप में था। प्रत्येक वर्ष राज्य अर्थव्यवस्था एवं व्यापार आयोग या राष्ट्रीय विकास एवं सुधार आयोग प्रत्येक सेकरिन उत्पादक के लिए उत्पादन कोटा जारी करता है। प्रत्येक माह सेकरिन उत्पादक चीनी एसोसिएशन को अपनी उत्पादन मात्रा प्रस्तुत करना चाहिए। प्रत्येक वर्ष के अन्त में चीनी एसोसिएशन सेकरिन के वार्षिक उत्पादन का सत्यापन करेंगे। यदि कोई उद्यम उसे आबद्ध कोटे से अधिक सेकरिन का उत्पादन करता है तब चीनी एसोसिएशन इस मामले को स्थानीय इकोनॉमी तथा व्यापार आयोग को सूचित करेंगे तथा स्टेट इकोनॉमी एवं व्यापार आयोग स्थानीय सरकार के जरिए उद्यम के विरुद्ध कार्रवाई करेंगे। निर्यात कोटाओं की निगरानी करने के लिए चीनी वाणिज्य मण्डल तथा चिकित्सा एवं स्वास्थ्य उत्पाद आयातक एवं निर्यातक उत्तरदायी हैं। प्रत्येक निर्यात बिक्री के लिए सेकरिन निर्यातक का मण्डल को निर्यात संविदा देनी चाहिए; मण्डल इसका सत्यापन करेंगे तथा संविदा पर हस्ताक्षर करेगा। इसके पश्चात निर्यातक चीनी सीमाशुल्क का अपने माल की घोषणा कर सकेगा।

उत्पादन नियंत्रण तथा सन्निधि

49. प्राधिकारी नोट करते हैं कि चीन में सेकरीन के निर्यात और घरेलू बिक्रियों के लिए ने केवल उत्पादन नियंत्रण बल्कि कोटा आबंटन भी लागू है। इस संबंध में प्राधिकारी निम्नलिखित को नोट करते हैं :-

50. एक चीनी समाचार पत्र 'प्युपिल्स डेली' में रिपोर्ट हुई प्रकाशित है। इस रिपोर्ट में यह बताया गया है कि 'चीन ने अपने सेकरीन के बाजार को पाँच कम्पनियों तक सीमित करने का निर्णय लिया है जो इस वर्ष चन के गैर-फैटेनिंग स्थापन के उत्पादन और बिक्री को नियंत्रित करेंगी। राज्य आर्थिक एवं व्यापार आयोग ने कहा है कि 25 फरवरी के चीनी दैनिक की रिपोर्ट के अनुसार नौ अन्य सेकरीन संयंत्रों को बंद कर दिया गया है या अन्य उद्योगों में लगा दिया गया है। रिपोर्ट में कहा गया है कि ये उपाय उन प्रयासों का हिस्सा है जो मंदी से गुजर रहे हैं चीन के चीन उद्योग की सहायतार्थ सेकरीन के उत्पादन को कम रक्के किए जा रहे हैं। पिछले चार वर्षों के दौरान घरेलू बाजार में कीमतें घटने के कारण चीन के चीनी उद्योग को दस बिलियन युआन (1.2 बिलियन अम.डा.) का घाटा हुआ है। उद्योग के आंतरिक खोत कीमत में इस गिरावट के लिए हाल के वर्षों में सेकरीन के बढ़ते हुए उत्पादन और व्यापक प्रयोग को उत्तरदायी मानते हैं। पेट्रोलियम एवं रसायन उद्योग के राज्य प्रशासन जो सेकरीन के उत्पादन पर निगरानी रखता है से जुड़े अधिकारियों ने कहा है कि चीनी उत्पादकों की सहायतार्थ, इस वर्ष घरेलू बाजार में 3000 टन से कम सेकरीन की बिक्री की अनुमति दी जाएगी। चीन के सेकरीन उत्पादकों को विदेशी बाजारों पर अधिक ध्यान देने के लिए कहा गया है। सेकरीन बाजार को नियंत्रित करने वाली पाँच कम्पनियाँ वर्ष 1999 में 20,000 टन से अधिक के उत्पादन की तुलना में इस वर्ष 16000 टन से कम सेकरीन का उत्पादन करेंगी। इसी दौरान चीनी उद्योग घरेलू बाजार में कीमतों को स्थिर करने के लिए इस वर्ष उत्पादन को 7.5 मिलियन टन से कम रखने की मांग कर रहे हैं। चीनी उत्पादकों की इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए इस वर्ष 143 छोटे संयंत्रों को बंद करने की योजना है।

51. राज्य आर्थिक एवं व्यापार आयोग के आर्थिक प्रचालन ब्यूरो द्वारा एक नोट जारी किया गया है। इसमें कहा गया है कि 'राज्य आर्थिक एवं व्यापार आयोग, वित्त मंत्रालय और सीमाशुल्क संबंधी सामान्य प्रशासन आदि समेत सात मंत्रालयों एवं आयोगों द्वारा सैकरीन के उत्पादन वितरण और अनुप्रयोगों पर नियंत्रण को मजबूत बनाने के लिए जारी विनियमों संबंधी सार्वजनिक घोषणा (राज्य आर्थिक एवं व्यापार आयोग के आर्थिक कार्य विभाग सं. 500(2000)) के सारांश तथा सैकरीन उद्योग द्वारा गंभीर अति-उत्पादन और अति-वितरण को घटाने के लिए नियमों को कड़ा करने के लिए राज्य परिषद के अध्यक्ष द्वारा जारी महत्वपूर्ण आधिकारिक निर्देशों के उत्तर में तथा आधिकारिक निर्देश के कार्यान्वयन और सैकरीन उद्योग पर नियंत्रण को और सुदृढ़ करने के लिए राज्य आर्थिक एवं व्यापार आयोग के आर्थिक कार्य ब्यूरो चाइना सुगर एसोसिएशन को विशिष्ट रूप से सैकरीन उत्पादों के आयात और निर्यात जैसे संबंधित प्रचालनों के साथ सैकरीन उद्योग के उत्पादन एवं वितरण के आंकड़ों के संग्रहण पर निगरानी रखने के लिए प्रभारी के रूप में प्राधिकृत किया गया है।

52. चाइना सुगर एसोसिएशन द्वारा दिनांक 6 दिसम्बर, 2003 को जारी एक पत्र में यह कहा गया है कि 'सैकरीन उत्पादन उपक्रमों राज्य आर्थिक एवं व्यापार आयोग द्वारा प्राधिकृत, चाइना सुगर कमीशन सैकरीन उत्पादन और वितरण पर नियंत्रण के प्राधिकरण एवं समन्वयन को स्वीकार करेगा। सैकरीन उत्पादन ऐसा रसायन उद्योग है जिससे भारी मात्रा में प्रदूष निस्सारण का प्रवाह होता है और इस निस्सारण में अमोनिया और नाइट्रोजन की मात्रा की सीओडी और सूचियों को राष्ट्रीय मानकों के समतुल्य करना मुश्किल है। चीनी उद्योग व्यापक तौर पर सैकरीन प्रदूषक के लिए निस्सारण मानकों को तैयार करने की शुरुआत करेगा और पर्यावरण की रक्षा करने के लिए राज्य पर्यावरण संरक्षण प्रशासन के विभागों के साथ तीव्रता से कार्य करेगा। एक खाद्य विनिर्मिति के रूप में सैकरीन मिठास की इकाई का सबसे सस्ता स्वीटनर है। आर्थिक लाभ के चलते खाद्य पदार्थों में आधिकारिक रूप से अनुमत स्तर से अधिक मात्रा में सैकरीन के प्रयोग इसकी तुलना में एक गंभीर विषय है जिससे उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य खतरे में पड़ जाता है तथा उनके वैधानिक अधिकार और हित प्रभावित होते हैं। हम खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने की दृष्टि से खाद्य बाजार में विशिष्ट रूप से सुधार करने के लिए उद्योग एवं वाणिज्य संबंधी राज्य प्रशासन विभाग के साथ मिलकर सक्रिय रूप से कार्य करने जा रहे हैं। सभी सैकरीन उत्पादन उपक्रमों को राज्य के नियमों और सैकरीन उत्पादन से संबंधित कानूनों का कड़ाई से पालन करना चाहिए। उन उपक्रमों पर आर्थिक दण्ड लगाया जाएगा जो अति उत्पादन या अतिवितरण करके नियमों तथा कानूनों का उल्लंघन करेंगे तथा यदि आवश्यक हो तो इस संबंध में विधिक उत्तरदायित्व की जाँच की जाएगी तथा इसे तय किया जाएगा।

53. राज्य आर्थिक एवं व्यापार आयोग के आर्थिक प्रचालन ब्यूरो द्वारा एक प्राधिकार पत्र में यह कहा गया है कि 'चीन की चीनी बाजार की सुरक्षा, गन्ना किसानों के हितों के संरक्षण तथा सार्वजनिक स्वास्थ्य की सुरक्षा हेतु सैकरीन उद्योग के उत्पादन और वितरण पर प्रतिबंध लगाने के लिए राज्य की नीति में विद्यमान विनियमों के आधार पर, पूर्ववर्ती राज्य आर्थिक एवं व्यापार आयोग व्यवस्था के अनुसार चाइना सुगर एसोसिएशन व्यापक पठति से पर्याप्त मात्रा में व्यवस्थित कार्य निष्पादन किया है और वर्ष 2000 से समुचित सफलता हासिल की हैं। इस उद्देश्य को आगे बढ़ाने के लिए सैकरीन उद्योग को विनियमित करने के लिए राज्य आर्थिक एवं व्यापार आयोग के आर्थिक प्रचालन ब्यूरो की मदद को जारी रखने के लिए चाइना सुगर एसोसिएशन को प्राधिकरण करने का निर्णय लिया गया है।'

54. वर्ष 2001, 2002, 2003 और 2004 में चीन जन.गण. के राष्ट्रीय विकास एवं सुधार आयोग द्वारा नोटिस जारी किए गए थे जिनमें पाँच अलग-अलग विनिर्माण इकाइयों के पर्यवेक्षक प्राधिकरण के रूप में तियांजिन नगरपालिका के आर्थिक एवं व्यापार आयोग, शंघाई नगरपालिका के आर्थिक एवं व्यापार आयोग, जियांगशु प्रेर्विस के आर्थिक एवं व्यापार आयोग, हेनान के हेनान प्रोर्विस के विकास एवं सुधार आयोग को दर्शाया गया है।

55. प्राधिकारी नोट करते हैं कि राष्ट्रीय विकास एवं सुधार आयोग प्रतिवर्ष सैकरीन के पाँच उत्पादकों के लिए उत्पादन कोटा जारी करता है और प्रत्येक माह सैकरीन उत्पादकों को सुगर एसोसिएशन को अपने उत्पादन की मात्रा की जानकारी देनी होती है। प्रत्येक वर्ष के अंत में, सुगर एसोसिएशन सैकरीन के उत्पादन का सत्यापन करती है। किसी मामले में यदि कोई उद्यम उसे प्रदत्त कोटे से अधिक सैकरीन का उत्पादन एवं घरेलू बाजार में बिक्री करता है तो सुगर एसोसिएशन स्थानीय आर्थिक एवं व्यापार आयुक्त को इस मामले की जानकारी देगा और स्थानीय सरकार के माध्यम से उस उद्यम के विरुद्ध कार्रवाई की जाती है। निर्यात कोटाओं पर निगरानी रखने की जिम्मेदारी चाइना चैम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड मेडिसिन एण्ड हेल्थ प्रोडक्ट्स इम्पोर्टर्स एण्ड एक्सपोर्टर्स से की है। प्रत्येक निर्यात बिक्री के लिए सैकरीन निर्यातक को चेम्बर को निर्यात संविदा भेजनी होती है तथा चेम्बर उसका सत्यापन करता है तथा संविदा पर हस्ताक्षर करता है इसके बाद ही निर्यातक निर्यात प्रयोजन हेतु चीन सीमाशुल्क को वस्तुएं भेज सकता है।

56. वर्ष 2004 के लिए इन पाँच उत्पादकों को उत्पादन के लिए 24000 मी. टन के कोटे का आबंटन किया गया था जिसमें से 19000 मी. टन निर्यात बिक्रियों के लिए था और शेष 5000 मी. टन घरेलू बिक्रियों (खाद्य उद्योग के लिए 15000 मी. टन और गैर-खाद्य उद्योग के लिए 3500 मी. टन के लिए आबंटित किया गया था। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि वर्ष 2000 से उत्पादन कोटा लगातार बढ़ रहा है। वर्ष 2000 में उत्पादन कोटा 15500 मी. टन था जिसे 2001, 2002, 2003 और 2004 में बढ़ाकर क्रमशः 17000, 17500, 17500 और 24000 मी. टन किया गया था और घरेलू बिक्री के लिए कोटे को वर्ष 2000 में 2500 मी. टन से बढ़ाकर इसी अवधि में 3000, 3500 और 5000 मी. टन किया गया था।

57. प्राधिकारी नोट करते हैं कि राज्य के प्राधिकारी निर्यातों को प्रतिबंधित नहीं करते हैं लेकिन निर्यात कोटा से अधिक मात्रा होने पर संबंधित पक्षकार को अभिपुष्टि हेतु चीन जन.गण. की अर्थव्यवस्था एवं व्यापार समिति को मामले की सूचना देनी होती है।

58. यह तर्क दिया गया है कि सैकरीन पर उत्पादन नियंत्रण प्रदूषण की रोकथाम के लिए है तथापि प्राधिकारी का यह विचार है कि यदि नियंत्रण केवल प्रदूषण की रोकथाम के लिए होता है तो इन वर्षों में उत्पादन कोटों में कमी हुई होती है जबकि इस मामले में उत्पादन कोटा बढ़ता रहा है। दूसरी बात यह है कि प्रदूषण नियंत्रण के लिए किसी विनियामक तंत्र की स्थापना करना आवश्यक होता है लेकिन घरेलू बाजार में केवल सैकरीन की बिक्री को प्रतिबंधित करके किस प्रकार प्रदूषण नियंत्रण किया जा सकता है ये समझ से परे है।

59. प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि सैकरीन के निर्यातकों को सरकार से सब्सिड के रूप में आय प्राप्त होती है तथापि सभी सहयोगी निर्यातकों के लेखों से इसका पता नहीं चला है।

60. इस तथ्य के मद्देनजर कि चीन जन.गण. मे उत्पादन, बिक्री नियंत्रण लागू है तथा घरेलू उद्योग में उत्पादन के केवल काफी कम हिस्से की बिक्री की अनुमति है तथा शेष उत्पादन को आवश्यक रूप से निर्यात करना होता है और इस तथ्य के मद्देनजर भी कि घरेलू बिक्री के लिए आबंटित कोटे से अधिक बिक्री किए जाने पर जुर्माने का भी प्रावधान है जबकि निर्यात बिक्री, लक्ष्य से अधिक होने पर केवल राज्य अर्थव्यवस्था एवं व्यापार आयोग से अनुमोदन प्राप्त करना होता है। तथा इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि सैकरीन के निर्यातकों को सब्सिडी दी जा रही है प्राधिकारी यह मानते हैं कि चीन जन.गण. में सैकरीन के निर्यातक एवं उत्पादक बाजार अर्थव्यवस्था के सिद्ध के अनुसार प्रचालन नहीं कर रहे हैं और वे इस पूर्वधारणा का खण्डन करने में विफल रहे हैं कि वे गैर-बाजार अर्थव्यवस्था में कार्य कर रहे हैं।

परिकलित सामान्य मूल्य

61. अतः प्राधिकारी, चीन के निर्यातकों के संबंध में सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु अनुबंध 1 के पैराग्राफ 1 से 6 तक में निर्धारित सिद्धांतों को लागू नहीं कर सकता है। चीन जन.गण. के सभी निर्यातकों/उत्पादकों के संबंध में सामान्य मूल्य का निर्धारण पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध 1 के पैरा 7 में यथाविहित गैर-बाजार अर्थव्यवस्था संबंधी नियमों के अनुसार किया जाता है।

62. प्राधिकारी नियमावली के अनुबंध 1 के पैरा 7 के अनुसार प्राधिकारी से अपेक्षा है कि वह सामान्य मूल्य का निर्धारण "गैर बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश की कीमत के आधार पर करे अथवा जहां ऐसा संभव नहीं हो सके अथवा समान उत्पाद के लिए भारत में वास्तव में दी गई अथवा देय कीमत सहित किसी अन्य यथोचित आधार पर करे। प्रारंभिक जाँच परिणाम से पहले घरेलू उद्योग का प्रस्ताव था कि दक्षिण कोरिया का यथोचित बाजार अर्थव्यवस्था वाला तीसरा देश माना जाए और उन्होंने इस संबंध में दक्षिण कोरिया की निर्यात कीमतों के संबंध में कुछ आंकड़े भी उपलब्ध कराए हैं। इन आंकड़ों की जांच के बाद यह पाया गया है कि यदि तीसरे देशों को दक्षिण कोरिया की कीमतों को सामान्य मूल्य के रूप में माना जाता है तो ऐसी स्थिति में पाटन मार्जिन परिकलित सामान्य मूल्य के आधार पर गणना की गई कीमत की तुलना में अधिक होगा, अतः, इस जानकारी पर विश्वास नहीं किया गया था भारत को तीसरे देश की कीमत ऐसी निर्धारण के लिए समुचित नहीं होगी क्योंकि भारत को तीसरे देशों (संबद्ध देश से इतर) से होने वाले आयात सामान्य मूल्य के सार्थक निर्णय माने जाने के लिए कम पड़ते हैं। अतः प्रारंभिक जाँच परिणामों के लिए प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य का निर्धारण "किसी अन्य यथोचित आधार" की पद्धति का सहारा लेकर किया था। इस संबंध में हितबद्ध पक्षकारों अर्थात् चांगसी और झिंगुआ ने कहा है कि प्रतिनिधि अर्थव्यवस्था का चयन युक्तिसंगत मानदण्डों और उत्पादन की क्षमता एवं मात्रा, स्वामित्व, विकास कच्ची सामग्री की उपलब्धता की तुलना के आधार पर किया जाना चाहिए और न कि मनमाने ढंग से युक्तिसंगत तुलनीय आधार के बिना। तथापि इस संबंध में किसी हितबद्ध पक्षकार ने कोई आंकड़े या सूचना प्रस्तुत नहीं की है। अंतिम जाँच परिणामों के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य के परिकलन हेतु अन्य युक्ति संगत आधार " पद्धति को अपनाया है।

घ.4 सामान्य मूल्य

63. इन परिस्थितियों में प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य का निर्धारण अंतर्राष्ट्रीय कीमतों पर सैकरिन के विनिर्माण के लिए कच्चे माल, चीनी उत्पादकों के खपत मानदंडों भारतीय उत्पादकों की परिवर्तन लागत तथा यथोचित लाभ को ध्यान में रखते हुए किया है। उपलब्ध उपरोक्त जानकारी के आधार पर सामान्य मूल्य की गणना जांच अवधि के दौरान 1 अम.डा. = 45.62 रूपए की औसत विनिमय दर के आधार पर **** अम.डा./मी. टन पर की गई है।

घ.5 निर्यातक प्रश्नावली का प्रत्युत्तर

64. हालांकि सामान्य मूल्य की गणना चीन जन.गण. को एक गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश मानने के बाद की गई है लेकिन उत्पादक/निर्यातक द्वारा दिए गए आंकड़ों और परिवहन, बीमा, समुद्री भाड़ा तथा समुद्री बीमा के संबंध में उत्पादक/निर्यातक द्वारा दी गई जानकारी का प्रयोग इनके सत्यापन के बाद कारखाना द्वार पर निर्यात कीमत के निर्धारण के लिए किया गया है।

घ.5.1 निर्यात कीमत (मै0 शंघाई फार्चून केमिकल्स कं0लि0 और मै0 मैजेस्टिक इंटरनेशनल ट्रेडिंग कं0लि0)

65. प्राधिकारी ने उत्पादक निर्यातक से आयातों की **** अम.डा./मी.टन पर भारित औसत सीआईएफ कीमत तय की है और **** अम.डा. पर अंतर्देशीय भाड़े, **** अम.डा. पर समुद्री भाड़े **** अम.डा. पर विदेशी बीमों और **** अम.डा. पर ऋण लागत के बारे में समायोजन करने के बाद सैकरिन के संबंध में कारखानागत निर्यात कीमत **** अम.डा./मी. टन आती है।

घ. 52 निर्यात कीमत (मै0 काइफेंग जिनहुआ फाइन केमिकल फैक्टरी)

66. प्राधिकारी ने उत्पादक से आयातों की **** अम.डा./मी.टन पर भारित औसत सीआईएफ कीमत तय की है और **** अम.डा. पर अंतर्देशीय भाड़े, **** अम.डा. पर समुद्री भाड़े, **** अम.डा. पर विदेशी बीमों और **** अम.डा. पर ऋण लागत के बारे में समायोजन करने के बाद सैकरिन के संबंध में कारखानागत निर्यात कीमत **** अम.डा./मी.टन आती है।

घ.5.3 निर्यात कीमत (मै0 तियानजिन चेंगजि केमिकल कं0लि0)

67. प्राधिकारी ने उत्पादक से आयातों की **** अम.डा./मी.टन पर भारित औसत सीआईएफ कीमत तय की है और **** अम.डा. पर अंतर्देशीय और विदेशी भाड़े, **** अम.डा. पर विदेशी बीमा और **** अम.डा. पर छूट/कमीशन के बारे में समायोजन करने के बाद सैकरिन के संबंध में कारखानागत निर्यात कीमत **** अम.डा./मी. टन आती है।

घ.5.4 चीन जन.गण. के अन्य निर्यातक/उत्पादक**अन्य निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत**

68. कारखाना निर्यात कीमत का निर्धारण प्राधिकारी के पास उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार किया गया है। प्राधिकारी ने आयातों की निर्यात कीमत **** अम.डा. पर अंतर्देशीय भाड़े, **** अम.डा. पर विदेशी भाड़े, **** अम.डा. पर विदेशी बीमें, **** अम.डा. पर कमीशन और **** अम.डा. पर अन्य मद पर विचार करने के बाद किया है अर सैकरिन के संबंध में कारखानागत निर्यात कीमत **** अम.डा./मी. टन आती है। (जांच अवधि के दौरान 45.62 रु. = 1 अम.डा. की औसत विनिमय दर अपनाई गई है)।

घ.6 पाटन मार्जिन

निर्यातक/उत्पादक	सामान्य मूल्य	कारखाना द्वार पर निर्यात कीमत अम.डा./मी.टन	पाटन मार्जिन
मै0 शंघाई फार्चून केमिकल कं.लि., चीन जन.गण. (विनिर्माता) और मै0 मैजेस्टिक इंटरनेशनल ट्रेडिंग कं0 लि0, हांगकांग (निर्यातक)	***	***	26.75 %
मै0 काइफेंग जिगहुआ फाइन केमिकल फैक्टरी	***	***	43.05%
मै0 तियानजिन चेंगजि केमिकल कं0लि0	***	***	49.65 %
अन्य	***	***	135.53%

69. आँकड़ों के सत्यापन के बाद इस प्रकार निर्धारित पाटन मार्जिन काफी अधिक है और वह न्यूनतम सीमा से अधिक है।

ड. क्षति निर्धारण संबंधी पद्धति और कारणात्मक संबंधों की जांच**ड.1 घरेलू उद्योग के विचार**

70. घरेलू उद्योग ने दावा किया है कि घरेलू उद्योग को हुई क्षति चार वर्षों का परिदृश्य ही नहीं है बल्कि घरेलू उद्योग को कई वर्षों से हानि हुई है। घरेलू उद्योग के अनुसार आयातों का रुझान यह दर्शाता है कि इसमें वर्ष 1993-94 से निरंतर वृद्धि होती रही है और तब से घरेलू उद्योग के हिस्से में गिरावट आती रही है। घरेलू उद्योग को मात्रा संबंधी गंभीर क्षति और कीमत क्षति हुई है और उन्होंने दावा किया है कि घरेलू उद्योग द्वारा ऑफर की गई कीमतों और विदेशी उत्पादकों की कीमतों में भारी अंतर है। हालांकि घरेलू उद्योग उपानुकूल कीमतों की ऑफर करता रहा है लेकिन उसके सामने कीमत कटौती की स्थिति आती रही है। इसके परिणामस्वरूप उपभोक्ता आयातित उत्पाद को अधिकाधिक प्राथमिकता दे रहे हैं। इसके परिणामस्वरूप पाटित आयातों की मात्रा में आई गिरावट के कारण घरेलू उद्योग के उत्पादन तथा क्षमता उपयोग में गिरावट आई है। घरेलू उद्योग के उत्पाद के लिए मांग इतनी कम हो गई है कि भारतीय उत्पादक अपने कार्यचालन को रोकने अथवा बंद करने के लिए बाध्य हो रहे हैं। अधिक कीमत कटौती और घरेलू उद्योग द्वारा परिणामी उपानुकूल कीमतों के होने पर उस पर

भारतीय उत्पादकों की वित्तीय स्थिति पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा है। भारतीय उत्पादक निरंतर वित्तीय हानियों का सामना करते रहे हैं। ऐसी वित्तीय हानियों में वृद्धि होती रही है। बढ़ती हुई वित्तीय हानियों का नकद प्रवाह और भारतीय उत्पादकों के आरओआई पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है; निरंतर पाटन होने से देश के उत्पादन, क्षमता उपयोग तथा रोजगार में हानि हुई है; अधिक कीमत कटौती के परिणामस्वरूप आयातों की मात्रा में वृद्धि हुई है और इसके परिणामस्वरूप देश में इस उत्पाद की मांग में आयातों के हिस्से में वृद्धि हुई है। इनके प्रत्यक्ष परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा एक दशक पहले के 80% से घटकर इस समय 15% से भी कम हो गया है।

उ.2 प्राधिकारी द्वारा जाँच

71. प्रारंभिक जाँच परिणामों में प्राधिकारी ने मै0 एएस इंटरप्राइजेज मै0 स्वाति पेट्रोकेमिकल्स, मै0 श्री वरधानी एव मै0 अमीता कैमिकल्स के आंकड़ों के अलावा मै0 जेट्संस, जिला-थाणे महाराष्ट्र, मै0 गोल्डस्टार, अंकलेश्वर और मै0 अमीता कैमिकल्स, बड़ौदा के आंकड़ों पर विचार किया था। मै0 एशियन कैमिकल्स द्वारा प्रदत्त आँकड़ों पर विचार नहीं किया गया था क्योंकि यह पाया गया था कि यह कम्पनी सैकरीन की आयातक भी थी। प्रारंभिक जाँच परिणामों के बाद प्राधिकारी ने नोट किया कि मै0 गोल्डस्टार अब सैकरीन का उत्पादन नहीं करते हैं और उनकी उत्पादन सुविधाएं बिक चुकी हैं। मै0 विष्णु कैमिकल्स लि0 ने सूचना उपलब्ध कराई थी और सत्यापन के बाद इस पर विचार किया गया था। अन्य विनिर्माण इकाइयों के आंकड़े का जहाँ संभव हो सत्यापन किया गया है।

72. प्रारंभिक जाँच परिणामों के बाद, आयातक मै0 आर्टेक सर्फिन कैमिकल्स लि0, मुम्बई, मै0 कोलगेट पामोलिव (इंडिया) लि0, मुम्बई मै0 पॉरस कैम पलास्टर प्रा0लि0, मुम्बई और मै0 ग्राउर एण्ड वील लि0 मुम्बई ने भी सत्यापन और अंतिम जाँच परिणामों में विचार किए जाने के लिए आँकड़े प्रस्तुत किए थे। आयातकों द्वारा प्रदत्त आँकड़ों का सत्यापन किया गया था। आयातकों द्वारा यह तर्क दिया गया था कि संबद्ध वस्तु के एक बड़े विनिर्माता मै0 विष्णु कैमिकल्स लि0 ने जाँच में भाग नहीं लिया। प्राधिकारी ने जाँच की शुरुआत से पहले आवेदक की योग्यता की गणना के प्रयोजनार्थ मै0 विष्णु कैमिकल्स लि0 के उत्पादन पर विचार किया था। प्रारंभिक जाँच परिणामों के बाद मै0 विष्णु कैमिकल्स लि0 ने अपेक्षित सूचना उपलब्ध कराई थी और इस पर सत्यापन के बाद विचार किया गया था। मै0 विष्णु कैमिकल्स ने यह आरोप लगाया है कि "यदि चीनी उत्पादकों को सामग्री की पाटन जारी रखने से नहीं रोका जाता है तो इससे हमारी उत्पादन सुविधाओं की संस्थापना में वास्तविक रूप से बाधा उत्पन्न/निश्चित रूप से इससे हम अपनी क्षमता में आगे और वृद्धि नहीं कर पाएंगे। इस हितबद्ध पक्षकार ने पहले यह तर्क दिया था कि मै0 विष्णु कैमिकल्स को जाँच में शामिल होना चाहिए। अतः प्राधिकारी ने देरी होने पर भी इस कम्पनी द्वारा प्रस्तुत आँकड़ों को जाँच में शामिल किया था। प्राधिकारी ने प्रारंभिक जाँच परिणामों के बाद विभिन्न पक्षकारों द्वारा उनके अनुरोधों में दिए गए विभिन्न तर्कों को नोट किया है।

73. पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 3.1 और पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध -II में इन दोनों मुद्दों की उद्देश्यपरक जाँच का प्रावधान है, (क) पाटित आयातों की मात्रा तथा समान उत्पादों के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर पाटित आयातों का प्रभाव, और (ख) पाटित आयातों के मात्रा प्रभाव के संबंध में ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन उत्पादों का परिणामी प्रभाव। प्राधिकारी से अपेक्षा है कि वे इस बात की जाँच करें कि क्या समग्र रूप में अथवा आयातक देश के उत्पादन अथवा खपत के संबंध में आयातों

मे काफी वृद्धि हुई है। पाटित आयातों के कीमत प्रभाव के संबंध में प्राधिकारियों से अपेक्षा है कि वे इस बात की जांच करें कि क्या आयातक देश में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों द्वारा काफी कीमत कटौती हुई है अथवा यह भी कि क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से काफी सीमा तक कीमतों पर अन्यथा दबाव आया है अथवा कीमत वृद्धि में रुकावट आई है जो अन्यथा एक काफी सीमा तक बढ़ गई होती।

74. क्षति विश्लेषण के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों की मात्रा तथा कीमत प्रभावों और कीमतों तथा लाभप्रदता पर उसके प्रभावों की जांच की है ताकि क्षति और पाटन एवं क्षति के बीच कारणात्मक संबंधों, यदि कोई हों, जांच की जा सके।

75. चूंकि संबद्ध देश से हुए निर्यातों के संबंध में सकारात्मक पाटन मार्जिन साबित हो गया है, अतः संबद्ध देश से हुए सभी निर्यातों को क्षति विश्लेषण एवं कारणात्मक संबंधों की जांच के प्रयोजनार्थ पाटित आयात माना गया है।

(क) मात्रा प्रभाव: पाटित आयातों का मात्रा प्रभाव और घरेलू उद्योग पर प्रभाव:

76. घरेलू उद्योग ने कहा कि उनके संबद्ध माल का निर्यात सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 के अध्याय 29 के शीर्ष 29251100 के तहत किया जा रहा है। प्राधिकारी ने वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआई एंड एस) के सौदेवार आंकड़ों को ध्यान में लिया है। संबद्ध देश तथा अन्य देश से सैकरिन के आयातों के वर्ष-वार आंकड़े नीचे तालिका में दिए जा रहे हैं :-

(i) आयात मात्रा और संबद्ध देश का हिस्सा

विवरण	इकाई	2001-2002		2002-2003		2003-2004		जन. 04- दिस. 04	
		मात्रा	मूल्य	मात्रा	मूल्य	मात्रा	मूल्य	मात्रा	मूल्य
डीजीसीआई एंड एस के अनुसार आर्यत									
संबद्ध देश (चीन)	मी.टन/लाख	1140.00	1217	1344	1428	1772	2006	1872	2017
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	100	118	117	155	165	164	166
अन्य देश	मी.टन/लाख	14.25	59	46	44	5	13	6	19
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100		321		36		44	
कुल आर्यत	मी.टन/लाख	1154.25	1276	1389	1472	1778	2019	1878	2036
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100		120		154		163	

आयातों में बाजार हिस्सा

आयातों का बाजार हिस्सा	इकाई	2001-02	2002-03	2003-04	जन.-दिस- 04
चीन	%	98.77	96.70	99.71	99.68
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	98	101	101
अन्य देश	%	1.23	3.30	0.29	0.34
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	267	23	27

77. ये आयात यह दर्शाते हैं कि चीन से हुए आयात कुल आयातों का प्रमुख हिस्सा है। अन्य देशों से हुए आयात आधार वर्ष से जांच अवधि तक नाकाफी मात्रा में हुए हैं।

78. चीन से हुए आयातों में निरंतर वृद्धि होती रही है और उनमें आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान 64% की वृद्धि हुई है। इससे इंगित होता है कि मांग में हुई वृद्धि की तुलना में जिनमें आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान 55% की वृद्धि हुई है, संबद्ध देश से हुए आयातों में वृद्धि अनुपातिक अधिक रही।

79. संबद्ध देश से हुए आयातों की कीमतें जांच अवधि में आधार वर्ष की तुलना में एकसामन रही है लेकिन ये कीमतें अन्य देशों की कीमतों की तुलना में काफी कम रही है। संबद्ध देश के संबद्ध माल की कीमतें आधार वर्ष से जांच अवधि तक 25% 45% के बीच रही है। प्रारंभिक जांच परिणामों के पश्चात हितबद्ध पक्षकारों द्वारा यह तर्क दिया गया था कि अन्य देशों से संबंधित आयातों के आंकड़े प्रथम दृष्ट्या सही नहीं हैं। तथापि, इस तर्क के समर्थन में कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया गया था। प्राधिकारी ने सौदावार आयातों के आंकड़ों की जांच की है और यह पाया है कि अन्य देशों से आयात 4 भिन्न-भिन्न देशों से 24 लेनदेन बनते हैं। आयात संबंधी लेनदेन बहुत कम मात्रा में है, तथापि, इससे संबद्ध देश और अन्य देशों के बीच कीमत अंतर का संकेत मिलता है।

80. आयात आंकड़े यह दर्शाते हैं कि संबद्ध देश से संबद्ध माल के हिस्से में वर्ष 2002-03 को छोड़कर सतत रूप से वृद्धि होती रही। वर्ष 2001-02 में यह 98.8% रहा था और यह जांच अवधि के दौरान बढ़कर 99.7% हो गया जबकि अन्य देशों का हिस्सा जो वर्ष 2000-01 के दौरान 1.2% रहा था, घटकर जांच अवधि के दौरान 0.3% रह गया।

(ii) मांग, उत्पादन और बाजार हिस्से

(क) मांग में वृद्धि

मांग	इकाई	2001-02	2002-03	2003-04	जन.- दिस. 04
चीन से आयात	मी. टन	1140	1344	1772	1872
अन्य देश	मी. टन	14	46	5	6
बिक्रियां- घरेलू उद्योग	मी. टन	172	185	199	250
बिक्रियां- अन्य	मी. टन	73	48	39	40
कुल मांग	मी. टन	1399	1622	2016	2168
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	115.95	144	155.04

81. संबद्ध माल की कुल मांग की गणना घरेलू उत्पादकों की घरेलू बिक्रियों और सभी देशों से संबद्ध माल के आयातों (जैसाकि डीजीसीआईएंडएस द्वारा बताया गया) को जोड़ने के बाद की गई है। संबद्ध माल में आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान मांग में काफी वृद्धि दर्शाई गई है। जांच अवधि के दौरान मांग में आधार वर्ष की तुलना में 55% की वृद्धि हुई हो गई। वर्ष-दर-वर्ष आधार पर वर्ष 2002-03, 2003-04 और जांच अवधि में इसमें क्रमशः 16%, 24% और 8% की वृद्धि हुई।

(ख) घरेलू उद्योग का उत्पादन

क्षमता	इकाई	2001-02	2002-03	2003-04	जन.- दिस. 04
घरेलू उद्योग	मी. टन	510	510	870	870

उत्पादन	इकाई	2001-02	2002-03	2003-04	जन.- दिस. 04
घरेलू उद्योग	मी. टन	173.19	189.07	210.09	243.88
प्रवृत्ति	सूचीब	100	109	121	140

क्षमता उपयोग	इकाई	2001-02	2002-03	2003-04	जन.- दिस. 04
घरेलू उद्योग	%	33.96	37.04	24.15	28.03
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	109	71	82

82. घरेलू उद्योग ने आरोप लगाया है कि चीन से कई वर्षों से पाटन निरंतर होता रहा है। अतः यह उद्योग पाटित आयातों से प्रतिस्पर्धा करने के लिए अत्यधिक दबाव में रहा है और इसके कई यूनिट कायम नहीं रह सके इसलिए वे बंद हो गए। प्राधिकारी नोट करते हैं कि कुछ अन्य उत्पादकों ने अपने संयंत्रों के जरिए सैकरीन का उत्पादन करना बंद कर दिया है और उन्होंने किसी अन्य सामग्री का उत्पादन शुरू नहीं किया है। कुछेक विनिर्माता अपनी उत्पादन क्षमता की तुलना में बहुत कम मात्रा में सैकरीन का उत्पादन कर रहे हैं। मै. विष्णु केमिकल्स जो पूर्व में सोडियम बाइक्रोमेट, बेसिक क्रोमियम सल्फेट जैसे अन्य रसायनों का विनिर्माण कर रहा था, ने जांच अवधि के दौरान 360 मी. टन क्षमता स्थापित की है। भारतीय विनिर्माण क्षमता के अनुमान से यह पता चलता है कि वर्ष 2001-02 और 2002-03 के दौरान यह 1160 मी. टन थी, तथापि, मै. विष्णु केमिकल्स की क्षमता को जोड़कर यह जांच अवधि के दौरान बढ़कर 1560 मी. टन हो गई। क्षति विश्लेषण के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने छह विनिर्माताओं के आंकड़ों पर विचार किया है और इससे पता चलता है कि वर्ष 2001-02 और 2002-03 में क्षमता 510 मी. टन थी जिसमें वर्ष 2003-04 में और जांच अवधि के दौरान मै. विष्णु केमिकल्स लि. द्वारा 360 मी. टन की क्षमता के जुड़ने से इसमें परिवर्तन हो गया था।

83. सैकरीन के उत्पादन के संबंध में घरेलू उद्योग के आंकड़े से पता चलता है कि उत्पादन में जांच अवधि के दौरान वर्ष 2001-02 में 173.72 मी. टन से जांच अवधि के दौरान बढ़कर 243.88 मी. टन हो गया था (विष्णु केमिकल्स को छोड़कर जांच अवधि के दौरान यह 186.01 मी. टन था)। वर्ष-दर-वर्ष आधार पर इसमें 2002-03 में 8.73% की वृद्धि हुई और इसमें 2003-04 में 21.17% और जांच अवधि के दौरान 40.39% की वृद्धि हुई थी (मै. विष्णु केमिकल्स को छोड़कर इसमें 2003-04 में 19% की और जांच अवधि के दौरान 7% की वृद्धि हुई)।

84. क्षमता उपयोग संबंधी प्रवृत्ति से पता चलता है कि यह 2001-02 में 34.06% से बढ़कर 2002-03 में 37.04% हो गई और इसमें 2003-04 में 24.20% की और जांच अवधि के दौरान 28.03% की गिरावट आयी (मै. विष्णु केमिकल्स को छोड़कर क्षमता उपयोग 2003-04 में 40.65% और जांच अवधि के दौरान 36.47% थी)। आंकड़ों से पता चलता है कि संबद्ध वस्तु की मांग में तीव्र वृद्धि से घरेलू उद्योग को लाभ नहीं हुआ था क्योंकि यह क्षमता उपयोग में मांग में वृद्धि के अनुरूप बढ़ोत्तरी नहीं कर सका।

घरेलू बिक्रियां	इकाई	2001-02	2002-03	2003-04	जन.- दिस. 04
घरेलू उद्योग	मी. टन	171.81	184.79	199.10	250.07
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	108	116	146

85. बिक्री संबंधी आंकड़ों से पता चलता है कि घरेलू बिक्री की मात्रा वर्ष 2001-02 में 171.81 मी. टन से बढ़कर जांच अवधि के दौरान 250.07 मी. टन हो गई (मै. विष्णु केमिकल्स को छोड़कर बिक्रियां जांच अवधि के दौरान बढ़कर 194.18 मी. टन हो गई)। औसत माल सूची स्टॉक से पता चलता है कि यह वर्ष 2001-02 में 11 दिन की बिक्री के बराबर था और यह वर्ष 2003-04 में बढ़कर 27 दिन के बराबर हो गया। जांच अवधि के दौरान यह 23 दिन के बराबर था (विष्णु केमिकल्स को छोड़कर जांच वर्ष 2003-04 में यह 22 दिन और जांच अवधि के दौरान 30 दिन के बराबर था)।

86. जांच अवधि के दोन मांग में 55% की वृद्धि और उपलब्ध क्षमता के बावजूद घरेलू उद्योग मांग में वृद्धि के अनुरूप अपने क्षमता उपयोग में वृद्धि नहीं कर सका बल्कि उनकी औसत माल सूची में काफी वृद्धि हो गई जिससे बाजार दशाओं में उत्पादकों को अपने उत्पाद की बिक्री में कठिनाई हुई जहां पाटित माल सस्ती कीमतों पर उपलब्ध रहा।

मांग में हिस्सा	इकाई	2001-02	2002-03	2003-04	जन.- दिस. 04
चीन से आयात	%	81.48	82.83	87.93	86.33
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	101.64	107.91	105.95
अन्य देश	%	1.02	2.82	0.25	0.29
घरेलू उद्योग	%	12.28	11.39	9.88	11.53
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	93	80	94
अन्य उत्पादक	%	5.22	2.96	1.93	1.84

87. इन आंकड़ों से पता चलता है कि जांच अवधि के दौरान मांग में वृद्धि आधार वर्ष की तुलना में 55% हुई। संबद्ध देश की मांग में हिस्सा आधार वर्ष के दौरान काफी अधिक रहा था लेकिन उसमें वृद्धि होती गई और यह आधार वर्ष की तुलना में वर्ष 2003-04 में 8% और जांच अवधि के दौरान 6% हो गया। अन्य देशों की मांग में हिस्सा आधार वर्ष के दौरान नाकाफी रहा और वह जांच अवधि के दौरान कम हो गया जो आधार वर्ष में 30% रहा था। घरेलू उद्योग की मांग के हिस्से में आधार वर्ष से वर्ष 2003-04 तक गिरावट आती रही। तथापि, नये विनिर्माता मै. विष्णु केमिकल्स द्वारा की गई बिक्रियों के कारण यह जांच अवधि तक बढ़कर 11.53% हो गया। इसी प्रकार, अन्य घरेलू उत्पादकों के हिस्से में सतत रूप से गिरावट आती रही जो जांच अवधि के दौरान घटकर 1.84% रह गया। इस विश्लेषण से परिलक्षित होता है कि संबद्ध देश के निर्यातकों ने न केवल मांग में हुई वृद्धि का लाभ उठाया है बल्कि उन्होंने अन्य निर्यातकों तथा घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से पर कब्जा कर दिया जिसके परिणामस्वरूप अन्य निर्यातकों का हिस्सा नाकाफी रह गया।

(ख) घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों का कीमत प्रभाव

88. संबद्ध देश से पाटित आयातों की वजह से घरेलू उद्योग की कीमतों पर पड़े प्रभाव की जांच कीमत कटौती, कम दाम पर बिक्री, कीमत दबाव तथा कीमत मंदी, यदि कोई हो, के संपर्क में की गई है। इस विश्लेषण के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग की भारित औसत उत्पादन लागत, भारित औसत निवल बिक्री वसूली (एनएसआर) और अक्षतिकारी कीमत (एनआईपी) (घरेलू उद्योग की लागत निर्धारण जानकारी को सामान्य बनाने के बाद परिकलित) की तुलना संबद्ध देश से हुए आयातों की पहुंच लागत से की गई है।

निर्यात कीमत	इकाई	2001-02	2002-03	2003-04	जन.- दिस. 04
चीन	रु./कि.ग्रा.	106.78	106.27	113.17	107.75
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	99.52	105.99	100.91
अन्य आयात	रु./कि.ग्रा.	411.81	97.13	259.97	309.60

89. कीमतों संबंधी आंकड़ों से विदित होता है कि संबद्ध देश की कीमतों में आधार वर्ष से लेकर जांच-अवधि तक कोई ज्यादा परिवर्तन नहीं हुआ है। किंतु, ये कीमतें अन्य देशों की कीमतों की तुलना में काफी कम रहीं। संबद्ध देश की कीमतें अन्य देशों की कीमतों के 25%-4% के बीच रहीं। यद्यपि, अन्य देशों से आयातों की मात्रा बहुत कम है, तथापि 4 भिन्न-भिन्न देशों से 24 सौदों से संबद्ध देश और अन्य देशों के बीच कीमत अंतर का संकेत मिलता है।

(ii) कीमत कटौती और कम दाम पर बिक्री के प्रभाव

	इकाई	2001-02	2002-03	2003-04	जन.- दिस. 04
उत्पादन लागत					
घरेलू उद्योग	रु./कि.ग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	96	93	97
बिक्री कीमत					
घरेलू उद्योग	रु./कि.ग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	96	95	86
लाभ/हानि					
घरेलू उद्योग	रु./कि.ग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	-100	-105	-70	-236
घरेलू बिक्रियों पर लाभ/हानि					
घरेलू उद्योग	रु./लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	-100	-113	-81	-343
नगद लाभ					
घरेलू उद्योग	रु./लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	-100	-126	-74	-422
निवल बिक्री वसूली मूल्य (एनएसआर x बिक्रियां)	रु./लाख	***	***	***	***

प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	103	111	125
पहुंच मूल्य					
सीमा शुल्क		35%	30%	25%	20%
चीन	रू./कि.ग्रा.				130.59
कीमत कटौती की सीमा	%				30-40%
एनआईपी	रू./कि.ग्रा.				***
कम कीमत पर बिक्री की सीमा	%				45-55%

90. घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत (निवल बिक्री वसूली) से उत्पादन लागत की तुलना में जांच अवधि के दौरान आधार वर्ष के 86% तक गिरावट होने का पता चलता है जो आधार वर्ष के 97% से जांच अवधि के दौरान घट गया ।

91. कीमत कटौती का निर्धारण संपूर्ण जांच अवधि में संबद्ध देश से हुए पाटित आयातों के भारित औसत पहुंच मूल्य की तुलना उसी अवधि के लिए घरेलू उद्योग की भारित औसत निवल बिक्री वसूली से करके किया गया है । इस प्रयाजन के लिए आयातों के पहुंच मूल्य की संबद्ध देश की निर्यात कीमतों के संबंध में डीजीसीआईएंडएस के आंकड़ों में बताए गए मूल्य में 1% हैंडलिंग प्रभार और लागू मूल सीमाशुल्क जोड़कर की गई है ।

92. घरेलू उद्योग की निवल बिक्री वसूली के निर्धारण में घरेलू उद्योग द्वारा दी गई छूटों तथा कमीशन और भुगतान किए गए केन्द्रीय उत्पाद शुल्क की छूट दी गई है ।

93. कम दाम पर बिक्री कीमत के निर्धारण के प्रयोजनार्थ संबद्ध देश से हुए आयातों की भारित औसत पहुंच कीमत की तुलना जांच अवधि के लिए निर्धारित घरेलू उद्योग की अक्षतिकारी बिक्री कीमत से की गई है ।

94. प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध देश से हुए आयात घरेलू उद्योग की निवल बिक्री वसूली और घरेलू उद्योग के लिए अनुमानित अक्षतिकारी कीमत से काफी कम रही है । इस प्रकार, इसके परिणामस्वरूप, कीमत कटौती काफी रही और कम दाम पर बिक्री कीमत काफी कम रही । जांच अवधि के दौरान कीमत कटौती 30- 40% के बीच रही और कम दाम पर बिक्री कीमत 40-50% के बीच रही ।

(iii) पाटित आयातों के कीमत दबाव तथा मंदी के प्रभाव

95. पाटित आयातों के कीमत दबाव संबंधी प्रभावों की जांच भी संबद्ध देश से उत्पादन लागत, निवल बिक्री वसूली और पहुंच मूल्यों के संदर्भ में की गई है ।

96. उत्पादन लागत के रूझान से पता चलता है कि उत्पादन लागत जो आधार वर्ष में 97% रही थी, कम हो गई जबकि बिक्री कीमत में जो आधार वर्ष में 86% रही थी जांच अवधि के दौरान गिरावट आ गई । चूंकि संबद्ध देश से हुए आयात कई वर्षों से काफी कम कीमत पर होते रहे, अतः बिक्री कीमतों में

पहले ही दबाव आता गया। किंतु, जांच अवधि के दौरान कीमत कटौती जो 30% 40% रही थी, कीमतों पर और आगे दबाव पड़ गया जिससे बिक्री कीमतें उत्पादन लागत की तुलना में आधार वर्ष के 86% की तुलना में जांच अवधि के दौरान घटकर 97% रह गई।

ड.3. अन्य क्षति कारकों की जांच

97. घरेलू उद्योग की मात्रा तथा कीमतों पर पाटित आयातों और अन्य प्रमुख क्षति संकेतकों जैसे आयातों की मात्रा तथा मूल्य, घरेलू उद्योग की क्षमता और पिछले खंडों में उल्लिखित विभिन्न खंडों के बाजार हिस्सों में मांग पद्धति, अन्य आर्थिक कारकों जिनसे घरेलू उद्योग को क्षति होने का संकेत मिल सकता है, के प्रभाव की जांच करने के बाद का निम्नानुसार विश्लेषण किया गया है :-

(i) वृद्धि

वृद्धि (वर्ष- दर- वर्ष आधार)	इकाई	2001-02	2002-03	2003-04	जन.- दिस. 04
बिक्री में वृद्धि	%	-	7.56	7.74	25.60
मांग में वृद्धि	%	-	15.95	24.25	7.53
घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में वृद्धि	%	-	-7.23	-13.29	16.75
उत्पादन में वृद्धि	%	-	9.16	11.12	16.08
औसत स्टॉक में वृद्धि	%	-	85.88	128.50	2.79

98. वर्ष- दर- वर्ष आधार पर मापी गई वृद्धि से पता चलता है कि मांग में सतत रूप से वृद्धि होती गई। आयातों में भी सतत वृद्धि होने का पता चलता है। उत्पादन, बिक्री और औसत माल सूची में वृद्धि का रुख प्रदर्शित होता है। घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा वर्ष 2003-04 तक नकारात्मक था तथापि, जांच अवधि में यह सकारात्मक हो गया।

उत्पादकता

रोजगार (कर्मचारियों की सं.)	इकाई	2001-02	2002-03	2003-04	जन.- दिस. 04
घरेलू उद्योग	सं०	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	100	122	118

घरेलू उद्योग का वेतन एवं मजदूरी	इकाई	2001-02	2002-03	2003-04	जन.- दिस. 04
घरेलू उद्योग	लाख रु.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	89	95	106

उत्पादकता (प्रति कर्मचारी उत्पादन)	इकाई	2001-02	2002-03	2003-04	जन.- दिस. 04
घरेलू उद्योग	Mt	***	***	***	***
प्रवृत्ति	Indexed	100	109	100	120

99. रोजगार संबंधी आंकड़ों से पता चलता है कि कर्मचारियों की संख्या में आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान 18% की वृद्धि हुई थी। घरेलू उद्योग के वेतन और मजदूरी में आधार वर्ष से 2003-04 तक गिरावट आ रही थी, तथापि, मै. विष्णु कैमिकल्स द्वारा उत्पादन शुरू किए जाने के कारण इसमें आधार वर्ष से जांच अवधि के दौरान 6% की वृद्धि हुई थी। उत्पादकता जिसे प्रति कर्मचारी संबद्ध वस्तु के उत्पादन के रूप में माना जाता है, में वृद्धि का रुख प्रदर्शित हो रहा है। यह जांच अवधि के दौरान आधार वर्ष की तुलना में 20% अधिक था।

(iv) पूंजी निवेश पर आय और पूंजी जुटाने की क्षमता

	इकाई	2001-02	2002-03	2003-04	जन.- दिस. 04
उत्पादन लागत					
घरेलू उद्योग	रू./कि.ग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	96	93	97
बिक्री कीमत					
घरेलू उद्योग	रू./कि.ग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	96	95	86
लाभ/हानि					
घरेलू उद्योग	रू./कि.ग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	-100	-105	-70	-236
घरेलू बिक्रियों पर लाभ/हानि					
घरेलू उद्योग	रू./लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	-100	-113	-81	-343
नकद लाभ					
घरेलू उद्योग	रू./लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	-100	-126	-74	-422

100. ये आंकड़े यह इंगित करते हैं कि उत्पादन लागत में आधार वर्ष से लेकर जांच अवधिक तक गिरावट आती रही थी। इसमें जांच अवधि के दौरान आधार वर्ष की तुलना में 97% की गिरावट आ गई। बिक्री कीमत में भी गिरावट का रुख दर्शाया गया था लेकिन बिक्री कीमत में गिरावट उत्पादन लागत में आई गिरावट की तुलना में अधिक दर्शायी गयी है। बिक्री कीमत आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान घटकर 86% रह गई। प्रति इकाई हानियों में आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान 126% की वृद्धि हो गई (विष्णु कैमिकल्स को छोड़कर हानियों में आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान 41% की वृद्धि हुई है)। इसी प्रकार, घरेलू बिक्रियों में आई हानि में वृद्धि होती गई थी और यह आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान बढ़कर 243% हो गई थी (विष्णु कैमिकल्स को छोड़कर, हानियों में 59% की वृद्धि हुई है)। नकद (हानियों) में आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान 322% की वृद्धि हो गई (विष्णु कैमिकल्स को छोड़कर, नकद हानियों में आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान 81% की वृद्धि दर्ज की गई थी)।

iii. रोजगार एवं मजदूरी

रोजगार (कर्मचारियों की संख्या)	इकाई	2001-02	2002-03	2003-04	जन.- दिस. 04
घरेलू उद्योग	संख्या	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	100	122	118
वेतन एवं मजदूरी (घरेलू उद्योग)					
घरेलू उद्योग	लाख रु.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	89	95	106

101. रोजगार संबंधी आंकड़ों से पता चलता है कि कर्मचारियों की संख्या में आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान 18% की वृद्धि हुई थी। घरेलू उद्योग के वेतन तथा मजदूरियों में आधार वर्ष से लेकर जांच अवधि तक 6% की वृद्धि हुई थी।

iv. निवेश पर आय और पूंजी जुटाने की क्षमता

	इकाई	2001-02	2002-03	2003-04	जन.- दिस.
निवल निर्धारित परिसंपत्तियां (उत्पाद हेतु)					
घरेलू उद्योग	लाख रु.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	117	516	521
लगाई गई पूंजी (उत्पाद हेतु)					
घरेलू उद्योग	लाख रु.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचबद्ध	100	98	248	269
लगाई गई पूंजी पर प्राप्ति					
घरेलू उद्योग	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	-100	-124	-34	-168

102. उपरोक्त आंकड़े दर्शाते हैं कि मैसर्स विष्णु कैमिकल्स द्वारा निवेश किए जाने के कारण जांच अवधि के दौरान इस उत्पाद के संबंध में कंपनी की निवल निर्धारित परिसंपत्तियों में पर्याप्त परिवर्तन हुआ है। लगाई गई पूंजी से प्राप्त आय आधार वर्ष में -100 के आधार से घटकर -168 (सूचीबद्ध) रह गई।

(v) निवेश

103. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की क्षमता में परिवर्तन हुआ है। मैसर्स विष्णु कैमिकल्स ने, जो पहले सोडियम बाइक्रोमेट और बेसिक क्रोमियम सल्फेट जैसे रसायनों का विनिर्माण करती थी, नए निवेश करके नई क्षमता स्थापित की है।

(vi) पाटन की मात्रा

104. किसी सीमा तक संकेतक के रूप में पाटन की मात्रा जिससे पाटित आयातों से घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती है, से यत्न चलता है कि ऊपर उल्लिखित संबद्ध देश के विरुद्ध निर्धारित पाटन मात्रा जांच अवधि के दौरान काफी अधिक रही है।

(vii) कीमतों पर प्रतिकूल प्रभाव डालने वाले कारक

105. सतत ढाँचा में परिवर्तन, यदि कोई है, घरेलू उद्योग में प्रतिस्पर्धा और प्रतिस्पर्धी प्रतिस्थापनों की जांच पाटित आयातों से उत्पन्न कारकों के संबंध में विस्लेषण हेतु की गई है जिनसे घरेलू बाजार की कीमतों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता हो। आधार वर्ष की तुलना जांच अवधि के दौरान उत्पादन लागत घटकर 97% रह गई। चीन की निर्यात कीमत में गिरावट होने से पहले वर्ष 2003-04 के दौरान 6% की वृद्धि हो गई और आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान यह 1% अधिक रही। डोमाशुल्क में गिरावट आई तो आधार वर्ष में 35% रही थी और यह घटकर जांच अवधि के दौरान 20% रह गई। परिणामस्वरूप, चीन से हुए आयातों के लैंडेड मूल्य आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान घटकर 90% रह गया। किंतु, आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान बिक्री कीमत घटकर 86% रह गई। प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध देश से आयातित माल का लैंडेड मूल्य घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से काफी कम रहा जिससे भारतीय बाजार में स्थानीय कीमत बढ़ती आ गई।

(viii) माल सूची

आयात स्टॉक	इकाई	2001-02	2002-03	2003-04	जन.- दिस. 04
घरेलू उद्योग	मी. टन			***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	189	425	437
सूची में बिक्री दिवसों की संख्या					
घरेलू उद्योग	दिन		12	25	21

106. ये आंकड़े यह इंगित करते हैं कि घरेलू उद्योग की माल सूची में आधार वर्ष से जांच- अवधि तक सतत रूप से वृद्धि होती रही। इसमें आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान 357% की वृद्धि हो गई। बिक्री दिवसों की संख्या में परिवर्तित होने पर यह वर्ष 2001-02 में 7 दिवसों के बराबर रही थी और यह जांच अवधि के दौरान 25 दिवस हो गई।

4. अन्य उपाय कारकों का कारणत्वक संबंध

107. प्राधिकारी के कारणत्वक संबंध तथा सूची नियमावली में यथाविहित अश्रेयस्कर कारकों की भी जांच की है जिससे अन्य कारकों के परिणामस्वरूप क्षति, यदि कोई है, को अलग किया जा सके। इस संबंध में उपरोक्त निष्कर्षों में उल्लिखित संकेतक कारकों की जांच की गई है।

(i) अन्य स्रोतों से आयातों की मात्रा और कीमत

108. प्राधिकारी नोट करते हैं कि अन्य देश से हुए आयातों की मात्रा ज्यादा नहीं है। संबद्ध देश से हुए आयातों का हिस्सा जांच अवधि के दौरान कुल आयातों के 99.7% रहा है। इस प्रकार, अन्य देशों से हुए आयातों के कारण घरेलू उद्योग को क्षति नहीं हुई है।

(ii) मांग में कमी और/अथवा खपत के पैटर्न में परिवर्तन

109. क्षति अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु में सतत वृद्धि दर्शाई गई है। संबद्ध वस्तु की कुल मांग में आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान 55% की वृद्धि दर्शाई गई है। घरेलू बाजार में इस उत्पाद के खपत पैटर्न में ऐसा कोई ज्यादा परिवर्तन नहीं हुआ है जिसे घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण माना जा सकता है।

(iii) व्यापार प्रतिबंधात्मक पद्धतियां और विदेशी तथा घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा

110. प्राधिकारी नोट करता है कि इस उद्योग में कोई प्रतिबंधात्मक पद्धति मौजूद नहीं है जिसके कारण घरेलू उद्योग को क्षति हुई हो।

(iv) प्रौद्योगिकी विकास

111. प्राधिकारी नोट करता है कि इस उत्पाद की उत्पादन प्रौद्योगिकी में कोई परिवर्तन नहीं आया है। अतः किसी अन्य प्रौद्योगिकी के विकास को घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण नहीं माना जा सकता है।

(v) निर्यात निष्पादन

112. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा कोई निर्यात नहीं किया गया और इसीलिए यह कारक घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण नहीं हो सकता है।

(vi) घरेलू उद्योग की उत्पादकता

113. घरेलू उद्योग की उत्पादकता में (जांच अवधि के दौरान) प्रति कर्मचारी उत्पादन की दृष्टि से काफी सुधार हुआ है। अतः उत्पादकता ऐसा कारक नहीं है समता है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती है।

114. ऐसा कोई अन्य कारक प्राधिकारी के संज्ञान में नहीं लाया गया है जिसकी वजह से घरेलू उद्योग को क्षति होने की संभावना हो।

ड.5. क्षति संबंधी मानदंडों के संबंध में निष्कर्ष

115. संबद्ध वस्तु की मांग में वृद्धि बढ़ती हुई प्रवृत्ति को दर्शाती है। आधार वर्ष की तुलना करने पर यह जांच अवधि के दौरान बढ़कर 55% हो गई। घरेलू उद्योग के उत्पादन और बिक्रियों में नए उद्यमी मै. विष्णु कैमिकल्स के आने से, जिन्होंने 2003-04 में क्षमता स्थापित की है और जांच अवधि के दौरान उत्पादन शुरू किया था, जांच अवधि के दौरान वास्तविक रूप में वृद्धि हुई है। जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की मांग के हिस्से में वृद्धि हुई है। तथापि, समग्र रूप में घरेलू उद्योग उत्पादन की बढ़ती मांग से कोई लाभ नहीं ले सका है। मै. विष्णु कैमिकल्स उस स्थिति में था कि वह उत्पाद हानियों पर बेच सके और आयातित उत्पाद की कीमतों के विरुद्ध उन्हीं की बैचमार्किंग कर सके। बढ़ती माल सूची पाटित वस्तु के कारण बाजार में संबद्ध वस्तु की बिक्री में घरेलू उद्योग की मुश्किल को दर्शाती है। घरेलू उद्योग के उत्पादन में जांच अवधि के दौरान वृद्धि हुई थी और इसलिए क्षमता उपयोग लगभग 30% के उपानुकूल स्तर पर नहीं। जांच अवधि के दौरान उत्पादन लागत आधार वर्ष की तुलना में 97% घट गई लेकिन आधार वर्ष की तुलना में बिक्री कीमत घट कर 86% रह गई। निरंतर पाटन की वजह से कीमत दबाव के बावजूद कीमतों में और आगे दबाव आ गया क्योंकि जांच अवधि के दौरान कीमत कटौती 3-4% के दायरे में रही। आधार वर्ष के दौरान हानियों का सामना कर रहे घरेलू उद्योग की वित्तीय स्थिति और अधिक बिगड़ गई क्योंकि नकद प्रवाह तथा आरआई पर पाटन तथा गंभीर कीमत कटौती के कारण प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। आर्थिक मापकों के विश्लेषण से घरेलू उद्योग के निष्पादन में गिरावट और घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति होने का संकेत मिलता है।

116. ऊपर किए गए विश्लेषण से इंगित होता है कि घरेलू उद्योग तथा सम्बद्ध देश के निर्यातक की कीमतों में उल्लेखनीय भिन्नता थीं। जब घरेलू उद्योग घाटा उठाते हुए भी उत्पाद की बिक्री कर रहा था, उसे पाटित आयातों की कीमत कटौती का भी सामना करना पड़ रहा था। इसके परिणामस्वरूप, उत्पादन के संबंध में निरपेक्ष रूप से पाटित आयातों की मात्रा में वृद्धि हुई। कीमत कटौती होते रहने और वह कीमत, जिस पर घरेलू उद्योग प्रत्यक्ष बिक्री के लिए बाध्य था, के कारण वित्तीय स्थिति पर दुष्प्रभाव पड़ा और नकद प्रवाह तथा निवेश से घरेलू उद्योग का लाभ भी प्रभावित हुआ। उपर्युक्त जांच के आधार पर निष्कर्ष निकाला जाता है कि सम्बद्ध देश से निर्यातित सम्बद्ध वस्तु की कीमतें उसके सामान्य मूल्य से बहुत कम हैं। घरेलू उद्योग की क्षतिरहित कीमत और आवेदक की सम्बद्ध वस्तु से औसत बिक्री प्राप्ति के साथ पाटन, क्षति एवं कारणात्मक संबंध स्पष्ट रूप से स्थापित होता है।

च. क्षति मार्जिन की तीव्रता

117. क्षति मार्जिन के निर्धारण के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी द्वारा निर्धारित क्षति रहित कीमत की तुलना निर्यातों के पहुंच मूल्य से की गई है। क्षति मार्जिन की गणना निम्नानुसार की गई है :-

कम्पनी का नाम	क्षति मार्जिन
मेसर्स शंघाई फार्चून केमिकल कम्पनी लि. एवं मेसर्स मेजेस्टिक इंटरनेशनल ट्रेडिंग कम्पनी लि.	*** अम. डालर प्रति मी. टन
मेसर्स शंघाई फार्चून केमिकल कम्पनी लि.	*** अम. डालर प्रति मी. टन
मेसर्स काइफेंग जिगहुआ फाइन केमिकल फैक्ट्री	*** अम. डालर प्रति मी. टन
मेसर्स तियानजिन चांगजी केमिकल कं. लि.	*** अम. डालर प्रति मी. टन
चीन जन. गण. से अन्य	*** अम. डालर प्रति मी. टन

छ. भारतीय उद्योग का हित एवं अन्य मुद्दे

118. सामान्यतः पाटनरोधी शुल्कों का उद्देश्य पाटन, जो घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचा रहा है, को समाप्त करना और भारतीय बाजार में खुली व निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा की सिति की पुनर्स्थापना करना है, जो देश के सामान्य हित में है।

119. प्राधिकारी स्वीकार करते हैं कि पाटनरोधी शुल्कों से सम्बद्ध वस्तुओं अथवा सम्बद्ध वस्तुओं के उपयोग से विनिर्मित उत्पादों का कीमत स्तर प्रभावित हो सकता है और इसके परिणामस्वरूप इन उत्पादों की सापेक्ष प्रतिस्पर्धात्मकता पर भी कुछ प्रभाव पड़ सकता है। तथापि, पाटनरोधी उपायों से भारतीय बाजार में निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा कम नहीं होगी। इसके विपरीत, पाटनरोधी उपाय करने से पाटन पद्धतियों के कारण अनुचित लाभ नहीं उठाया जा सकेगा और सम्बद्ध वस्तुओं के उपभोक्ताओं को उनकी पसन्द की वस्तुओं की उपलब्धता बनाए रखने में सहायता मिलेगी। छोटे उद्योग पर इसके प्रभाव को न्यूनतम रखने के उद्देश्य से प्राधिकारी द्वारा कम पाटन एवं क्षति मार्जिन के आधार पर पाटनरोधी शुल्क की संस्तुति करना उपयुक्त समझा गया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी उपाय करने से सम्बद्ध देश से आयातों में किसी भी प्रकार की कमी नहीं आएगी; अतः उपभोक्ताओं के लिए इस उत्पाद की उपलब्धता प्रभावित नहीं होगी।

ज. निष्कर्ष

120. उपर्युक्त पर विचार करके प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि

- (क) सम्बद्ध देश से भारत को सम्बद्ध वस्तुओं का आयात सामान्य मूल्य से कम मूल्य पर किया गया है;
- (ख) घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है;
- (ग) क्षति सम्बद्ध देश से पाटित आयातों के कारण हुई है।

झ. सिफारिशें

121. सम्बद्ध वस्तुओं के आयातों पर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाना जरूरी समझा गया है। तदनुसार, प्राधिकारी सैकरीन के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हैं।

122. पाटन की मार्जिन अथवा इससे कम के बराबर पाटनरोधी शुल्क की राशि संस्तुत करने का निर्णय लिया गया है, जिसे लगाए जाने पर घरेलू उद्योग की क्षति दूर हो जाएगी। आयातों की पहुंच मूल्य की तुलना घरेलू उद्योग हेतु जांच अवधि के लिए निर्धारित गैर-क्षति कीमत से की गई थी। इस मामले में पाटन मार्जिन, क्षति मार्जिन से कम है, तदनुसार केन्द्रीय सरकार द्वारा सम्बद्ध देश के मूल के अथवा वहां से निर्यातित सम्बद्ध वस्तुओं के सभी आयातों पर नीचे दी गयी तालिका के कॉलम सं. 8 में इंगित राशि के तुल्य पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश की जाती है।

शुल्क तालिका

क्र.सं.	उप-शीर्ष अथवा टैरिफ मद	माल का विवरण	उद्भव का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	राशि	माप की इकाई	मुद्रा
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	29251100 अथवा अन्य कोई सीमाशुल्क शीर्ष	सैकरीन	चीन जन. गण.	चीन जन. गण.	शंघाई फार्चून केमिकल्स कं. लि., चीन	मैजेस्टिक इंटरनेशनल ट्रेडिंग कं. लि.	717.21	मी. टन	अम. डा.
2	वही	वही	चीन जन. गण.	चीन जन. गण.	शंघाई फार्चून केमिकल्स कं. लि., चीन	कोई	807.77	मी. टन	अम. डा.
3	वही	वही	चीन जन. गण.	चीन जन. गण.	काइफेंग जिगहुआ फाइन केमिकल फैक्टरी	कोई	1093.28	मी. टन	अम. डा.
4	वही	वही	चीन जन. गण.	चीन जन. गण.	ताइनजिन चेंजजि केमिकल कं. लि.	कोई	1127.67	मी. टन	अम. डा.
5	वही	वही	चीन जन. गण.	चीन जन. गण.	कोई	कोई	2151.33	मी. टन	अम. डा.
6	वही	वही	चीन जन. गण.	चीन जन. गण. के अलावा अन्य कोई देश	कोई	कोई	2151.33	मी. टन	अम. डा.
7	वही	वही	चीन जन. गण. के अलावा अन्य कोई देश	चीन जन. गण.	कोई	कोई	2151.33	मी. टन	अम. डा.

123. इस प्रयोजनार्थ आयातों का पहुंच मूल्य सीमाशुल्क विभाग द्वारा सीमाशुल्क अधिनियम, 1962 के तहत यथानिर्धारित आकलनीय मूल्य तथा सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 3, 3क, 8ख, 9 तथा 9क के तहत लगाए गए शुल्कों को छोड़कर सभी शुल्क होंगे।

124. प्राधिकारी, उपर्युक्त के अध्यक्षीन, दिनांक 1 अप्रैल, 2006 के प्रारम्भिक जांच परिणाम की पुष्टि करते हैं।

125. इस आदेश के विरुद्ध अपील 1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 तथा सीमाशुल्क टैरिफ नियमावली, 1995 के अनुसरण में सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क तथा सेवा कर अपीलीय अधिकरण के समक्ष की जा सकेगी।

क्रिस्टी एल. फेर्नान्डेज, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

NOTIFICATION

New Delhi, the 3rd January, 2007

Final Findings

Subject: Anti-dumping investigations involving import of saccharin exported from or originating in China PR—Final Findings.

No. 14/27/2004-DGAD.— Having regard to the Customs Tariff Act 1975 as amended in 1995 (hereinafter referred to as the Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, (hereinafter referred to as the Rules) thereof:

2. Whereas M/s AS Enterprises, Mumbai, M/s Swati Petrochemicals Pvt. Ltd., Thane and M/s Shree Vardayani Chemical Industry Co. Ltd., Gujarat and their supporters representing All India Saccharin Manufacturers' Association, Mumbai (herein after referred to as the Applicants) have filed an application before the Designated Authority (hereinafter referred to as the Authority), in accordance with the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 and Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995 (herein after referred to as the Rules), alleging dumping of Saccharin (herein after referred to as subject goods), originating in or exported from China PR (herein after referred to as subject country) and requested for initiation of Anti Dumping investigations for levy of anti dumping duties on the subject goods. The Authority notified the Embassy of China PR about the receipt of dumping allegation in accordance with sub rule 5(5) of Rules.

3. WHEREAS, the Authority on the basis of sufficient evidence submitted by the applicant on behalf of the domestic industry, issued a public notice dated 4th July 2005 published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating Anti-Dumping investigations concerning imports of the subject goods originating in or exported from the subject country in accordance with the sub-Rule 6(1) of the Rules to determine the existence, degree and effect of alleged dumping and to recommend the antidumping duty.

4. And whereas the Designated Authority notified preliminary findings vide notification No. 14/27/2004-DGAD dated 1.4.2006 and recommended imposition of anti-dumping duty concerning imports of Saccharin originating in or exported from China PR.

A. Procedure After Preliminary Findings

5. Procedure described below has been followed with regard to this investigation after issuance of the public notice notifying the Preliminary Findings of the above investigations by the Authority:

(i) The Authority forwarded a copy of the preliminary findings to known interested

- parties who were interested to furnish their views, if any, on the preliminary findings within 40 days from the issue of the letter.
- (ii) The Authority also forwarded copy of the preliminary findings to Embassy of the subject country in New Delhi with a request to furnish their views on the preliminary findings.
 - (iii) The Authority held a Public Hearing on 14.6.2006 to hear the interested parties. The parties attending the Public Hearing were requested to file written submissions of the views expressed orally. The Designated Authority considered the submissions as received from the interested parties in the findings.
 - (iv) The Authority has considered all views expressed in submissions made by various interested parties subsequent to the preliminary findings.
 - (v) The Authority verified the information provided by the domestic industry to the extent considered necessary.
 - (vi) The Authority also verified the information provided by the cooperating producer/exporters and importers to the extent considered necessary.
 - (vii) Request was made to the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) to arrange details of imports of subject goods for the past three years and the period of investigations;
 - (viii) The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file (duly indexed) kept open for inspection by the interested parties. The acknowledgements of interested parties inspecting files and taking copies of the record have been kept in the public file.
 - (ix) Optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods in India based on the information furnished by the applicant on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) was worked out so as to ascertain if Anti-Dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to Domestic Industry;
 - (x) In accordance with Rule 16 of Rules Supra, the essential facts/basis considered for these findings were disclosed to known interested parties and comments received thereon have also been duly considered in these findings by making necessary corrections in the data.
 - (xi) *** in this Notification represents information furnished by the applicant on confidential basis and so considered by Authority under the Rules;
 - (xii) Investigation was carried out for the period starting from 1.1.2004 to 31.12.2004 (POI). The examination of trends in the context of injury analysis covered the period from April 2001-March 2004 and the POI.

B. Product under Consideration

- 6. The product under consideration in the present investigation is Saccharin.
- 7. Saccharin is a non-nutritive sweetener and considered to be low calorie substitute for cane sugar. Saccharin is primarily produced in two types i.e. soluble and insoluble saccharin. In market parlance soluble saccharin is called sodium saccharin

whereas insoluble sodium saccharin is called insoluble saccharin. Apart from sodium saccharin, saccharin can have other variants such as calcium and zinc saccharin. Saccharin is produced in two physical forms, viz. granular and powder. Sodium saccharin in granular form is used in situation where saccharin will be dissolved, the powder form which have been grounded and spray dried is used in dry mixes and pharmaceuticals. Insoluble form of saccharin is used in many pharmaceutical and medical applications. It is slightly soluble in water. Saccharin is more than 500 times sweeter than sugar. All forms of Saccharin are within the scope of the present investigation.

8. Saccharin is used in a variety of industry such as food and beverage, personal care products, table top sweeteners, electroplating brighteners, pharmaceuticals, etc.

9. Saccharin is classified under Chapter 29 of the Customs Tariff Act, 1975 under sub-headings No 29251100. The Custom classification is indicative only and not binding on the scope of investigations.

B.1 Like Article

10. The domestic industry has claimed that the goods produced by them are 'like articles' to the goods originating in or exported from subject country. The domestic industry is producing Saccharin in all its forms. Material produced by domestic industry and imported from China are comparable in physical form and chemical composition. Saccharin imported from China and produced by the domestic industry are technically and commercially substitutable. The domestic industry has also claimed that for manufacturing of Saccharin, Chinese producer follows ~~mannite~~ process for production of Saccharin whereas the Indian producers follow sodium dichromate route, however, there is no difference in the final product.

11. M/s Kaifeng Xinghua Fine Chemical Factory, China PR (Xinghua) stated that Indian saccharin require further processing by user for certain purposes and add cost and inconvenience to these users whereas Chinese saccharin can be used without any additional processing. It has also been stated that Indian and Chinese saccharin have not competed in the same market segments for many years.

12. M/s Tianjin Changjie Chemical Co. Ltd., China PR (Changjie) stated that they have sold sodium saccharin to India during POI and sodium saccharin was neither produced nor sold in India during POI by the applicant.

13. M/s Shanghai Fortune Chemicals Co. Ltd., Shanghai (SFC) stated that they are selling only sodium saccharin to the Indian market.

14. The Authority notes that saccharin produced by the domestic industry and imported from China are comparable. The water content in the soluble and insoluble saccharin are in different ranges. The insoluble saccharin has minimum water content. In many situations insoluble saccharin need to be converted into soluble saccharin for its final use. The Authority also notes that the imports to India are both of soluble and insoluble saccharin and there is no difference in product imported from China PR and produced by the domestic industry. The products produced by the domestic industry and imported from subject Country being identical in all essential characteristics and

commercially and technically substitutable, therefore, are treated as like articles within the meaning of the term as per 2(d) of the Rules.

C. Standing of the Domestic Industry and initiation of the investigation

15. The application was filed by M/s A S Enterprises, Mumbai, M/s Swati Petrochemicals Pvt. Ltd., Thane and M/s Shree Vardhyani Chemical Industry Co. Ltd., Gujarat and their supporters representing All India Saccharin Manufacturers Association, Mumbai, which are the producers of the subject goods in India. The applicants and their supporters account for 81.73% production of subject goods in India and there is no opposition to the application, therefore, the applicants have requisite 'standing' and constitute domestic industry within the meaning of the Indian Anti-dumping Rules.

16. After Preliminary Findings the interested parties have raised a question that one of the major producers i.e. M/s Vishnu Chemicals Ltd., Hyderabad has not joined the investigation, therefore, the calculation for standing is not correct. In this regard, the Authority before initiating the investigation had called for a production data of M/s Vishnu Chemicals Ltd. and its production data was taken into account for calculation of 'standing'. Therefore, the Authority holds that the applicants have requisite standing within the meaning of Anti-Dumping Rules. (After Preliminary Findings M/s Vishnu Chemicals Ltd. joined the investigation and provided the information)

17. It has also been contended by the 'Changjie' and 'Xinghua' that that Chinese saccharin is catering to different market segment and therefore standing should be calculated segment-wise. The Authority did not find any merit in this argument as the saccharin soluble and insoluble are being sold in the same market without any segmentation through same channel of distribution.

Confidentiality

18. The Authority has considered data relating to costing and price of all interested parties as confidential as it would give competitive advantage to their competitors. The other information has not been considered as confidential unless the responding party has given sufficient justification for keeping the information as confidential. The interested parties have raised objection about absence of summary of confidential costing data about the other interested parties, however, the Authority finds that none of the interested party has provided adequate summary of the confidential costing data and justified the same that it was not possible to provide summary of such data. The Authority has considered costing and sales data as confidential and accepted the position taken by all the interested parties in this regard.

D. Methodology for calculation of dumping margin and examination of market economy

D.1 Views of the Domestic Industry

19. The domestic industry submitted that China is a non-market economy. China has been treated as non-market economy by European Commission and USA in the past three years. In India the Designated Authority has treated China as non-market

economy practically in all the investigations initiated after the amendment dated 31.5.2002. Therefore, China is a non-market economy and market economy status treatment cannot be granted to the Chinese producers.

D.2 Submissions made by producers/exporters

D.2.1 Submissions by M/s Shanghai Fortune Chemicals Co. Ltd.(manufacturer) China PR and M/s Majestic International Trading Co. Ltd. (Exporter), Hong Kong.

20. The above mentioned producer and exporter stated that M/s Shanghai Fortune Chemicals Co. Ltd. is a limited company 100% owned by Fortune Knitting Co. Ltd., a company incorporated in Hong Kong. None of the shareholders of the company is a Chinese national. It further states that entire capital of the company has been contributed by a foreign company listed in Hong Kong and is regulated and governed by Company Law, Labour Law and Law of Wholly Foreign-owned Enterprises and Law of Accountancy of China PR. It also stated that raw materials purchased by the company reflect the market prices and are not affected by any State intervention/direction/involvement. It states that M/s Shanghai Fortune Chemicals Co. Ltd. is independently operating its business and arranging its production or sales according to the development of the market and no State or local authority is involved in fixing prices to be sold or quantities to be procured.

21. The protocol of accession of China to the WTO do not indicate Saccharin or any of the raw material for its production as subject to the price control. M/s Shanghai Fortune Chemicals Co. Ltd. is regulated and governed by all the laws including bankruptcy and property law applicable to the company. The company and the business sector does not have any special exemption.

22. Regarding control on production of Saccharin, it has been admitted that there is a production control over saccharin in China by the Government but production control is primarily intended to ensure quality of the product as it is used for edible preparations. It has been further stated that such restrictions do not amount to market intervention. Chinese control over production of saccharin is solely intended to control unauthorised use of saccharin which may cause health hazards. It has also been stated that regulations on saccharin have been issued jointly by Ministry of Health and SETC. Therefore, these regulations should not be construed as Government intervention leading the industry to operate under non-market condition.

D.2.2 Submission made by M/s Kaifeng Xinghua Fine Chemical Factory (Xinghua)

23. Xinghua is a State-owned enterprise in which Government of Kaifeng city holds 100% shares on behalf of Chinese people. It is governed by law of People's Republic of China on Industrial Enterprises owned by the whole people and Ordinance of Workers' Representative Congress of Industrial Enterprise of Public Ownership. Company Law is not applicable to them.

24. Raw materials and other inputs for manufacturing of Saccharin are procured from open market and rates are negotiated and fluctuant. It also states that 'since saccharin industry has a nature of serious pollution, it is necessary for State to take

some measures to guide saccharin producers for the purpose of environment protection. Saccharin producers can independently determine production, quantity and sales prices'.

25. Accounting principles are governed by Accounting Law of People's Republic of China which is issued by Standing Committee of the National People's Congress and Accounting System for Business Enterprises which is issued by the Ministry of Finance. About profit distribution, it states that 'Xinghua allocates 10% of its profits to its statutory common welfare fund. The rest eighty percent is undistributed. It should be noticed that the profit distribution will be decided by Xinghua itself and it is not involved any government control'. About bankruptcy and property law it states that Law of People's Republic of China Enterprise Bankruptcy applies to Xinghua.

D.2.3 Submissions made by M/s Tianjin Changjie Chemical Co. Ltd (Changjie)

26. Changjie states that it is a Chinese-foreign joint venture company registered under the Law of PR China on Chinese Foreign Equity Joint Ventures and owned by Tianjin Sanqian Science and Technology Group Company (Chinese company) and Xianggang Jielian Trading Co. Ltd. (Hong Kong company).

27. All raw materials and other inputs for manufacturing of Saccharin are purchased from open market and rates are negotiated and fluctuant.

28. Accounting principle and practices used by Changjie are governed by the Accounting Law of the People's Republic of China which is issued by the Standing Committee of the National People's Congress and Accounting System of Business Enterprises which is issued by the Ministry of Finance.

29. About the profit distribution, it states that 'Changjie shall withdraw the reserve fund, the enterprise development fund and the employees' encouragement and welfare fund according the law. Those funds are drawn from the profit after Changjie pays the income tax according to the law, and the percentage to be withdrawn is decided by the board. It should be noticed that the profit distribution will be decided by Changjie itself and it is not involved any government control.

D.3 Examination of Response to Market Economy Treatment Questionnaire by the Authority

30. The Designated Authority, as per para 8 (2) of the annexure 1 of AD rules for the purpose of assessing the normal value proceeded with the presumption that any country that has been determined to be or has been treated as a non-market economy for the purposes of anti-dumping investigations by the Designated Authority or by the competent authority of any WTO member country during the three years period preceding the investigation is a non-market economy country. In the past three years China PR has been treated as a non-market economy country in the anti-dumping investigations by WTO members such as EU and USA. In the instant case China PR has been proposed to be investigated as a non-market economy country.

31. As per Paragraph 8, Annexure I to the Anti Dumping Rules as amended, the presumption of a non-market economy can be rebutted if the exporter(s) from China

provide information and sufficient evidence on the basis of the criteria specified in sub paragraph (3) in Paragraph 8 and prove the contrary. The cooperating exporters/producers of the subject goods from People's Republic of China are required to furnish necessary information/sufficient evidence as mentioned in sub-paragraph (3) of paragraph 8 in response to the Market Economy Treatment questionnaire to enable the Designated Authority to consider the following criteria as to whether:-

- a) the decisions of concerned firms in China PR regarding prices, costs and inputs, including raw materials, cost of technology and labour, output, sales and investment are made in response to market signals reflecting supply and demand and without significant State interference in this regard, and whether costs of major inputs substantially reflect market values;
- b) the production costs and financial situation of such firms are subject to significant distortions carried over from the former non-market economy system, in particular in relation to depreciation of assets, other write-offs, barter trade and payment via compensation of debts;
- c) such firms are subject to bankruptcy and property laws which guarantee legal certainty and stability for the operation of the firms and
- d) the exchange rate conversions are carried out at the market rate.

32. The Authority sent copies of the questionnaires to all the known exporters for the purpose of determination of normal value. Responses have been received from three producer and related exporter and they have claimed Market Economy Treatment (MET). Response information to the questionnaire was filed by the following producers/exporters:

1. M/s Shanghai Fortune Chemicals Co. Ltd., China PR (SFC) and M/s Majestic International Trading Co. Ltd., Hong Kong (Majestic)
2. M/s Kaifeng Xinghua Fine Chemical Factory, China PR (Xinghua)
3. M/s Tianjin Changjie Chemical Co. Ltd., China PR (Changjie)

D.3.1 M/s Shanghai Fortune Chemicals Co. Ltd., China PR and M/s Majestic International Trading Co. Ltd., Hong Kong

33. The Authority notes that M/s Majestic International Trading Co. Ltd. (Majestic) is a private company established under Companies Act of the Hong Kong. It is owned by one Hong Kong national and M/s Fortune Knitting, a company incorporated in Hong Kong which in turn is owned by six private individuals. Majestic is a trading company involved in the purchase/import and export of chemicals and number of houseware items. They were procuring saccharin from a related company M/s Shanghai Fortune Chemical Co. Ltd. China PR and exporting the same to India and to other countries. Majestic is also involved in purchase of raw materials for manufacture of saccharin. It was noted that Majestic did not have any sales of saccharin in the domestic market.

34. M/s Shanghai Fortune Chemical Co. Ltd. (SFC) was established in 1988 as a joint venture (JV) between a State-owned enterprise with a shareholding (minority) and Fortune Knitting with a share holding (majority). Fortune Knitting is a Hong Kong based foreign company held by Canadian nationals. According to joint venture agreement, State-owned enterprise contributed capital in form of building and

equipment whereas Fortune Knitting company contributed capital in cash. For valuation purpose, both the parties engaged the services of accountancy firms. As per the JV agreement, the major portion of production was to be sold to the overseas market by JV foreign partner. The JV agreement underwent change in 1996 when M/s Fortune Knitting bought out the share of State-owned enterprise. Though the company was running into losses even then Fortune Knitting paid higher price to the State-owned enterprise as per negotiated settlement. From 1996 onwards SFC has no Government holding. In 2004 SFC acquired the land on lease basis from the Central Government whereas earlier it was paying the rent for the land use to the local government.

35. It was noted that there is overall production control on saccharin in China PR. The control was in form of production and allocation of quota for export and domestic sales. Every year, the State Economic and Trade Commission or National Development & Reform Commission issues the production quota to each saccharin producer. Each month the saccharin producers should submit their production quantity to the sugar association. At the end of each year the sugar association will carry out verification for the year's production of saccharin. If any enterprise produces more saccharin than the quota assigned to it then the sugar association reports the matter to local economy and trade commission and State Economic and Trade Commission takes action against the enterprise through local government. To monitor export quotas, the China Chamber of Commerce and Medicine & Health Products importers and exporters is responsible. For each export sales, the saccharin exporter should send export contract to the chamber, the chamber will verify and sign on the contract. Thereafter the exporter can declare their goods to the China Customs.

36. It was stated by the SFC that they had been exceeding the domestic quota sale every year and no penal action in this regard had been taken against SFC. According to SFC the production quota system was never thought of as a means to control production. Rather they were indicative in nature with a view to maintain pollution control under check. It was also stated that quota system did not control the price at which the product could be sold. In this regard, the Authority notes that in the year 2000 the SFC had sold a higher than the allocated quota in the domestic market and in this regard some penalty in the form of revenue appropriation by the Central Government was made. It was also noticed that the State Government does not restrict the saccharin export, however, export exceeding the plan target should be approved by the State Economic and Trade Commission.

37. One of the major raw materials Phthalic Anhydrite (PAN) was partly imported from Japan through M/s Majestic International and partly purchased from the domestic market. It was noted that PAN had also been obtained from domestic limited liability companies, Sino-foreign joint venture companies and wholly State owned companies. The procurement prices from domestic liability company and Sino joint venture companies and foreign companies were found to be in the same range reflecting the current market prices. Another raw material Ammonia Water has been shown to be purchased from three different domestic liability companies showing the comparable prices. Similarly, purchase of copper sulphate has been shown to be purchased from two different suppliers showing comparable prices.

38. Utilities such as electricity has been shown to be purchased as per the tariff structure.

39. It was noticed that the Majestic was running into losses in purchase of Saccharin from Shanghai and selling the same to the exporters in India.

D.3.2 M/s Kaifeng Xinghua Fine Chemical Factory

40. It was noted that Kaifeng Xinghua Fine Chemical Factory (Xinghua) was owned by Government of Kaifeng city during POI. Subsequently in 2005 there was change in ownership and it was taken over by a group. The company was originally established in accordance with Enterprise Legal Person Registration of the People Republic of China to develop the socialist market economy and therefore, owned by Chinese people. Pursuant to Law of People's Republic of China on Industrial Enterprises owned by own people and Ordinance of Workers' Representative Congress of Industrial Enterprises of Public Ownership, the basic form of practice for democratic management in Xinghua is workers' representative congress instead of board of directors. The congress represents the interest of all staff and workers and is an organ for the staff and workers to exercise their powers of democratic management over the enterprise.

41. It was noted that as per Chapter IV of Law of People's Republic of China on Industrial Enterprises, the selection of factory director was made by department of the government and he was legal representative of the enterprise. The director was exercising control on the production, operation and management of the enterprise. It was also noted that the enterprise was working under the guidance of State plan and was to arrange production of the product needed by the society.

42. It was noted that there is overall production control on saccharin in China PR. The control was in form of production and allocation of quota for export and domestic sales. Every year, the State Economic and Trade Commission or National Development and Reform Commission issues the production quota to each saccharin producer. Each month the saccharin producers should submit their production quantity to the sugar association. At the end of each year the sugar association will carry out verification for the year's production of saccharin. If any enterprise produces more saccharin than the quota assigned to it then the sugar association reports the matter to local economy and trade commission and State Economic and Trade Commission takes action against the enterprise through local government. To monitor export quotas, the China Chamber of Commerce and Medicine & Health Products importers and exporters is responsible. For each export sales, the saccharin exporter should send export contract to the chamber, the chamber will verify and sign on the contract. Thereafter the exporter can declare their goods to the China Customs.

43. Regarding raw materials it was noted that one of the main raw materials i.e. Phthalic Anhydride and some other raw materials were purchased from private company whereas other major raw materials were procured from State owned enterprises. However, raw materials purchased from State-owned enterprises could not be compared with raw materials from other companies to establish that purchases were made in accordance with market conditions. Copper sulphate one of the main raw materials was found to be purchased from state owned enterprise and it was explained that the company has monopoly to sell the product in the area.

44. It was noted that electricity and water were purchased from state owned enterprise in which state hold the monopoly.

D.3.3 M/s Tianjin Changjie Chemical Co. Ltd

45. It was noted that Tianjin Changjie Chemical Co. Ltd. (Changjie) was formed in 1993 as a joint venture company between a collectively owned enterprise and Xianggang Jielian Trade Co. Ltd. In 2001 the JV agreement was rewritten by replacing the name of collectively owned enterprise with Tianjin Sanqian Science and Technology Group Co. (TSSTGC). In 2004 TSSTGC was renamed as Tianjin Sanqian Group Company.

46. It was also noted that TSSTGC was founded in 1998 in which a collectively owned company with a very high percentage of shares and an industry company with balance shareholding, held the shares. In 2003 and 2004 four individuals bought 100% TSSTGC shares. It was informed that these four individuals were very high officials in the TSSTGC and could buy the company because of bonus earned by them in accordance with contracts between four individuals and TSSTGC. It was also informed that these four individuals were never been on the board of directors of Changjie. It was also noted that there was no document available to show such contract between four individuals and TSSTGC. It was also noted that there was no change in the management of the company reflecting the change of ownership in 2003 and 2004.

47. It was noted that major raw materials such as Phthalic Anhydrite, sulphuric acid and liquefied chlorine were purchased from state owned enterprises or joint venture companies and no comparison of prices could be made with the private company selling the same raw material. Electricity and water were provided by state owned enterprises and it was informed that the state hold monopoly in these areas.

48. It was noted that there is overall production control on saccharin in China PR. The control was in form of production and allocation of quota for export and domestic sales. Every year, the State Economic and Trade Commission or National Development and Reform Commission issues the production quota to each saccharin producer. Each month the saccharin producers should submit their production quantity to the sugar association. At the end of each year the sugar association will carry out verification for the year's production of saccharin. If any enterprise produces more saccharin than the quota assigned to it then the sugar association reports the matter to local economy and trade commission and State Economic and Trade Commission takes action against the enterprise through local government. To monitor export quotas, the China Chamber of Commerce and Medicine & Health Products importers and exporters is responsible. For each export sales, the saccharin exporter should send export contract to the chamber, the chamber will verify and sign on the contract. Thereafter the exporter can declare their goods to the China Customs.

Production Control and Subsidy

49. The Authority notes that in China there is not only production control but also quota allocation for export and domestic sales of saccharin. In this regard, the Authority takes note of the following

50. *A report published in 'People's Daily', a Chinese newspaper. The report states that "China has decided to limit its saccharin market to five companies that will control the production and sale of the non-fattening substitute for sugar this year. The State Economic and Trade Commission has said that nine other saccharin plants have been*

shut down or diverted to other industries, according to China Daily's report on February 25. The moves are part of an effort to curb saccharin production to help China's slumping sugar industry, the report says. Over the past four years, China's sugar industry lost ten billion yuan (1.2 billion US dollars) because of price dropping on the domestic market. Industry insiders attribute the price fall in part to mounting production and the widening use of saccharin in food and beverages in recent years. To help sugar producers, less than 3,000 tons of saccharin will be allowed onto the domestic market this year, said officials with the State Administration of Petroleum and Chemical Industries, which oversees saccharin production. Chinese saccharin producers will be urged to look more at overseas markets. The five companies that will control the saccharin market will produce less than 16,000 tons of saccharin this year, compared with more than 20,000 tons in 1999. Meanwhile, the sugar industry is seeking to keep production under 7.5 million tons this year to stabilize prices on the domestic market. Sugar producers plan to close 143 small plants this year to meet the target."

51. A note issued by Economic Operation Bureau of State Economic and Trade Commission. It states that, "In response to the gist of the Public Announcement on Regulations of strengthening the Control over Saccharin Production, Distribution and Application (No.500 [2000] Economic Operation Department of State Economic and Trade Commission) issued by the seven ministries and commissions including the State Economic and Trade Commission, the Ministry of Finance, the General Administration of Customs etc, and the important official instruction from the head of State Council to tighten the rule to curb the serious over-production and over-distribution in the Saccharin industry, in order to put into effect the official instruction and further fulfill the control over saccharin industry, Economic Operation Bureau of State Economic and Trade Commission authorizes specially China Sugar Association to be in charge of the supervision over and data collection and statistics of the production and distribution of saccharin industry along with the related operation such as import and export of saccharin products."

52. A letter dated Dec.6th 2003 by China Sugar Association which states that "Dear Saccharin Production Enterprises: Authorised by the State Economic and Trade Commission, China Sugar Commission will accept the authorization to coordinate the control over saccharin production and distribution. Saccharin production is a chemical industry that discharges significant amount of pollutant effluent and it is difficult to keep COD and indexes of the content of ammonia and nitrogen in the effluent tallied with the national standard. The sugar industry at large will initiate the formulation of Discharge Standard for Saccharin Pollutant and work vigorously with departments of State Environmental Protection Administration to safeguard the environment. As a food additive, saccharin is the cheapest sweetener in unit sweetness. Driven by economic profit, excessive application of saccharin in food beyond officially permitted scope has been a comparatively serious phenomenon that imperils directly the health of consumers as well as their legitimate right and interest. We are going to take an active part in working the departments of State Administration of Industry and Commerce to carry out specialized rectification over the food market so as to ensure food safety. All saccharin production enterprises must abide by rigorously the state rules and laws concerning saccharin production. Economic punishment shall be levied on those enterprises that breach the rules and laws by over-production and over-distribution and, if necessary, legal responsibility will be investigated and affixed."

53. A letter of authorization issued by Economic Operation Bureau of State Economic and Trade Commission which states that "Based on the regulations of the state policy to impose restriction over the production and distribution of saccharin industry for the sake of the safety of China's sugar market, upholding the interest of sugar farmers and safeguarding public health, in accordance with disposition by the former State Economic and Trade Commission, China Sugar Association has carried out considerable amount of meticulous performances in a deep-going way and achieved proper success since the year 2000. In order to further the end, decision is made to authorize China Sugar Association to continue to assist the Economic Operation Bureau of State Economic and Trade Commission to regulate the saccharin industry."

54. Notices issued by the National Development and Reform Commission of the People's Republic of China in the years 2001, 2002, 2003 and 2004 in which the supervisory authority for five different manufacture has been shown as Economy and Trade Commission of Tianjin municipality, Economy and Trade Commission of Shanghai Municipality, Economy and Trade commission of Jiangsu Province, Development and Reform Commission of Henan Province.

55. The Authority notes that every year National Development and Reforms Commission issues the production quota to five producers of saccharin and each month the saccharin producers are required to submit their production quantity to the sugar association. At the end of each year, the sugar association carries out verification of production of saccharin. In case an enterprise produces and sells in the domestic market more saccharin than the quota assigned to it, then the sugar association report the matter to Local Economy and Trade Commissioner and action is taken against the enterprise through local government. For monitoring the export quotas the China Chamber of Commerce and Medicine & Health Products Importers and Exporters is responsible. For each export sales the saccharin exporter is required to send export contract to the Chamber, the Chamber verify and sign on the contract thereafter only the exporter can send the goods to the China Customs for export purpose.

56. For 2004 the five producers were allocated 24000 MT quota for production out of which 19000 MT was for the export sales and balance 5000 MT (1500 MT for food industry and 3500 MT for non-food industry) was allocated for domestic sales. The Authority also notes that the production quota kept on increasing from year 2000 onwards. Production quota was 15500 MT in 2000 which increased to 17000, 17500, 17500 and 24000 MT in 2001, 2002, 2003 & 2004 respectively and quota for domestic sale increased from 2500 MT in 2000 to 3000, 3500 and 5000 MT in the same period.

57. The Authority notes that the State Authority does not restrict exports but for volume exceeding export quota the concerned party is required to report matter to Committee of Economy & Trading of People's Republic of China for ratification.

58. It has been contended that the production control on saccharin is for the purpose to put check on pollution, however, the Authority is of the view that had control been to check pollution only then the production quota would have declined over the years whereas in this case the production quota kept on increasing. Secondly, for pollution control some regulatory mechanism was required to be put in place but by restricting sales of saccharin in domestic market how pollution control can be achieved is not understandable.

59. The Authority also notes that the exporters of Saccharin are receiving subsidy income from the Government, however, the same could not be traced in the accounts of all the cooperating exporters.

60. In view of the fact that there is a production, selling control in China PR and only a small portion of production is allowed to be sold in domestic market and rest of the production necessarily need to be exported and also that for exceeding the quota allocated for domestic sales, there is penalty provision whereas for exceeding the export sales the target only need to be approved by State Economy and Trade Commission, and also further that there is subsidy available to the exporters of saccharin, the Authority holds that the Saccharin exporters and producers are not operating in accordance with market economy principle in China PR and failed to rebut the presumption that they are working in non-market economy.

Constructed Normal Value

61. The Authority is, therefore, unable to apply the principles set out in paragraph 1 to 6 of Annexure 1 for determination of normal value for the Chinese exporters. The normal value in respect of all exporters/producers from China PR is determined as per Rules relating to non-market economy as contained in para 7 of Annexure 1 of AD Rules.

62. As per para 7 of Annexure 1 of AD Rules, the Authority is required to determine normal value on the basis of 'price or constructed value in the market economy third country or the price from such a third country to other countries, including India or where it is not possible, or on any other reasonable basis, including the price actually paid or payable in India for the like product.' The domestic industry, before Preliminary Findings, had proposed that S. Korea may be considered as appropriate market economy third country and has provided some data in respect of export prices from S. Korea in this regard. On examination of this data it was found that if prices from S. Korea to other countries are taken as normal value, the dumping margin would be higher than that calculated by relying on the constructed normal value, therefore, the information was not relied upon. The prices from third country to India would also be not appropriate to determine as imports from other countries (other than subject country) to India is too small to permit any meaningful conclusion of the normal value. Therefore, for the purpose of Preliminary Findings, the Authority had determined the normal value by resorting to method 'any other reasonable basis'. In this regard, interested parties namely Changjie and Xinghua have stated that "the choice of surrogate economy must be based on reasonable criteria and include comparison of capacity and scale of production, ownership, development, availability of raw material and not arbitrarily based without reasonable comparable grounds". However, in this regard no data or information has been provided by any interested party. The Authority for the purpose of final findings has resorted to 'other reasonable basis' for construction of normal value.

D.4 Normal Value

63. Under the circumstances, the Authority has constructed the normal value by considering the raw material for manufacture of Saccharin at the international prices, the consumption norms of Chinese producers, conversion cost of Indian producers and reasonable profit. Based on above information available, the normal value has been calculated as USD *** PMT after considering the average exchange rate during POI of 1USD=Rs.45.62/-

D.5 Response to the Exporter's Questionnaire

64. Though the normal value has been constructed considering China PR as a non-market economy, however, the data provided by the producer/exporter and the information given by the producer/exporter regarding inland transportation, insurance, ocean freight and marine insurance has been taken into account, after verifying the same, to determine ex-factory export price.

D.5.1 Export price (M/s Shanghai Fortune Chemicals Co. Ltd. & M/s Majestic International Trading Co. Ltd.)

65. The Authority has taken weighted average CIF price as US\$*** PMT of imports from the producer exporter and after considering adjustment on account of inland freight as \$ ***, ocean freight as \$***, overseas insurance as \$***, credit cost as \$*** and others as US\$ *** ex-factory export price for Saccharin comes to USD *** per MT.

D.5.2 Export price (M/s Kaifeng Xinghua Fine Chemical Factory)

66. The Authority has taken weighted average CIF price as USD *** PMT of imports from the producer and after considering adjustment on account of inland freight as \$ ***, ocean freight as US\$ ***, overseas insurance as US\$ *** commissions as US\$ *** and others as \$*** ex-factory export price for Saccharin comes to USD *** PMT.

D.5.3 Export Price (M/s Tianjin Changjie Chemical Co. Ltd.)

67. The Authority has taken weighted average CIF price as \$*** PMT of imports from the producer and after considering adjustment on account of inland and overseas freight as \$***, overseas insurance as \$ ***, and rebates/commission as \$ ***, ex-factory export price for Saccharin comes to USD *** per MT.

D.5.4 Other exporters/producers from China PR

Export Price for Other Exporters

68. The ex-factory export price has been determined as per data available with the Authority. The Authority has taken CIF price as \$*** of imports after considering adjustment on account of inland freight as \$***, overseas freight as US\$ ***, overseas insurance as US\$ ***, commissions as US\$ *** and others as \$*** ex-factory export price for Saccharin comes to USD *** PMT. (The average exchange rate of Rs.45.62/- =1USD during the period of investigation has been adopted.)

D.6 Dumping Margin

Exporter/Producer	Normal Value	Ex-Factory Export Price USD/MT	Dumping Margin
M/s Shanghai Fortune Chemicals Co. Ltd., China PR (Manufacturer) and M/s Majestic	***	***	26.75 %

International Trading Co. Ltd., Hong Kong (Exporter)			
M/s Kaifeng Xinghua Fine Chemical Factory	***	***	43.05%
M/s Tianjin Changjie Chemical Co. Ltd.	***	***	49.65 %
Others	***	***	135.53%

69. The dumping margins so determine after verifying the data are significant and above de minimis.

E. METHODOLOGY FOR INJURY DETERMINATION AND EXAMINATION OF CAUSAL LINKS

E.1. Views of the domestic industry

70. Domestic industry has claimed that the injury to the domestic industry is not four years phenomena and the domestic industry has suffered injury since many years. As per the domestic industry, trend of imports shows that it has been increasing consistently since 1993-94 and share of the domestic industry had been declining since then. Domestic industry has faced severe volume injury as well as price injury and claimed that injury to the domestic industry has been caused by the dumped imports. It further states that 'There is too significant difference between the prices offered by the domestic industry and foreign producers. Even when the domestic industry has been offering sub-optimal prices, it is facing significant price undercutting. Resultantly, the consumers are increasingly preferring imported product. This has resulted in increase in volume of dumped imports and decline in sales volume of the domestic industry.' 'Decline in sales volume of the domestic industry directly resulted in decline in production and capacity utilization of the domestic industry.' Such is the extent of declining demand for the domestic industry's product that the Indian producers are being forced to suspend or close their operations; existence of significant price undercutting and resultant sub-optimal prices offered by the domestic industry have had direct impact on the financial situation of the Indian producers. Indian producers have been facing continuous financial losses. Such financial losses have been increasing; deteriorating financial losses are adversely impacting the cash flow and the ROI of the Indian producers; continuous dumping has resulted in loss of production, capacity utilization and the employment of the country; significant price undercutting has resulted in increase in volume of imports and consequently increase in share of imports in the demand of the product in the country. As a direct consequence, market share of the domestic industry fell from over 80% a decade before to less than 15% at present.'

E.2. Examination by the Authority

71. In the Preliminary Findings the Authority had taken into account data of M/s Jetsons, Dist. Thane, Maharashtra, M/s Goldstar, Ankleshwar, and M/s Ameeta

Chemicals, Baroda, in addition to data of M/s A S Enterprises, M/s Swati Petrochemicals, M/s Shree Vardhyani and M/s Ameeta Chemicals. The data provided by M/s Asian Chemicals was not taken into account as it was found that the company was also importer of Saccharin. After preliminary findings the Authority noted that M/s Goldstar is no longer producing saccharin and facility has been sold out. M/s Vishnu Chemicals Ltd. provided information and the same has been taken into account after verification. The data of other manufacturing units have been, wherever possible, verified.

72. Subsequent to preliminary findings, importers M/s Artek Surfin Chemicals Ltd., Mumbai, M/s Colgate Palmolive (India) Ltd., Mumbai, M/s Paras Chemplast Pvt. Ltd., Mumbai and M/s Grauer & Weil Ltd., Mumbai also submitted the data for verification and consideration in the final findings. The data provided by the importers was verified. It was contended by the importers that M/s Vishnu Chemicals Ltd., one of the major manufacturer of the subject goods has not joined the investigations. The Authority had before initiation of the investigation, taken into consideration production of M/s Vishnu Chemicals Ltd. for the purpose of calculation of 'standing' of the applicant. After preliminary findings M/s Vishnu Chemicals Ltd. submitted the required information and same has been taken into account after its verification. M/s Vishnu Chemicals has alleged that "should the Chinese producers allow to continue to dump the material, it would materially retard our establishment of the production facilities. Certainly, it would prevent us from increasing our capacity further." The interested party had earlier contended that M/s Vishnu Chemical Ltd. should join the investigations. The Authority therefore, has taken into account the data submitted by this company even at the late stage. The Authority has taken note of various arguments raised by various parties in their submissions subsequent to Preliminary Findings.

73. Article 3.1 of the ADA and Annexure II of the AD Rules provide for an objective examination of both, (a) the volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices in the domestic market for the like products; and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such products, with regard to the volume effect of the dumped imports. The authorities are required to examine whether there has been a significant increase in imports, either in absolute term or relative to production or consumption in the importing member. With regard to the price effect of the dumped imports, the authorities are required to examine whether there has been significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of the like product in the importing country, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree, or prevent price increase, which would have otherwise occurred to a significant degree.

74. For the purpose of injury analysis the Authority has examined the volume and price effects of dumped imports of the subject goods on the domestic industry and its effect on the prices and profitability to examine the existence of injury and causal links between the dumping and injury, if any.

75. Since positive dumping margin has been established for the exports from the subject country, entire exports from the subject country has been treated as dumped imports for the purpose of injury analysis and causal links examination.

(A) **VOLUME EFFECT:** Volume Effect of dumped imports and Impact on domestic Industry

76. The domestic industry stated that their subject goods are being exported under heading 29251100 of the Chapter 29 of Custom Tariffs Act, 1975. The Authority taken transaction-wise data from Directorate General of Commercial Intelligence & Statistics (DGCI&S). The year wise data of imports of saccharin from subject country and other countries are given below:

i) **Import Volumes and share of subject country**

Particulars	Unit	2001-2002		2002-2003		2003-2004		Jan 04-Dec 04	
		Volume	Value	Volume	Value	Volume	Value	Volume	Value
Import as per DGCI&S									
Subject Country (China)	MT/Lacs	1140.00	1217	1344	1428	1772	2006	1872	2017
Trend	Indexed	100	100	118	117	155	165	164	166
Other Countries	MT/Lacs	14.25	59	46	44	5	13	6	19
Trend	Indexed	100		321		36		44	
Total Imports	MT/Lacs	1154.25	1276	1389	1472	1778	2019	1878	2036
Trend	Indexed	100		120		154		163	

Market Share in Imports

Market share of Import	Unit	2001-02	2002-03	2003-04	Jan-Dec' 04
China	%	98.77	96.70	99.71	99.68
Trend	Indexed	100	98	101	101
Other countries	%	1.23	3.30	0.29	0.34
Trend	Indexed	100	267	23	27

77. Import data shows that imports from China constitute major portion of total imports. Imports from other countries constitute insignificant quantities from base year to POI.

78. Imports from China had been rising consistently and had increased by 64% during POI as compared to base year. This indicates that as compared to growth in demand which had risen by 55% during POI as compared to base year the imports growth from the subject country had been disproportionately high.

79. The prices of imports from subject country had remained same from base year to POI, however, these prices were significantly low as compared to the prices from the other countries. Prices of subject goods from subject country were in the range of 25%-45% of the prices from other countries from base year to POI. After Preliminary Findings it was contended by interested parties that imports data relating to other country is prima facie inaccurate. However, in support of the contention no evidence

was submitted. The Authority has checked the transactionwise data of imports and found that the imports from other countries constitute 24 transactions from 4 countries. The imports transactions are of small quantity, however, it indicates the price difference between subject country and other countries.

80. Data on imports shows share of subject goods from the subject country had been rising consistently except in the year 2002-03. It was 98.8% in the year 2001-02 and it increased to 99.7% during POI whereas share of the other countries which was only 1.2% during 2000-01, declined to 0.3% during POI.

ii) Demand, Output and Market shares

a) Growth in Demand

Demand	Unit	2001-02	2002-03	2003-04	Jan-Dec' 04
Imports from China	Mt	1140	1344	1772	1872
Other Countries	Mt	14	46	5	6
Sales - domestic industry	Mt	172	185	199	250
Sales -Others	Mt	73	48	39	40
Total demand	Mt	1399	1622	2016	2168
Trend	Indexed	100	115.95	144	155.04

81. The total demand of the subject goods has been calculated by addition of domestic sales of domestic producers and imports (as reported by DGCI&S) of subject goods from all the countries. The subject goods shows robust growth in demand during POI as compared to base year. During POI the demand had risen by 55% as compared to the base year. On the year to year basis, in 2002-03, 2003-04 and POI it rose by 16%, 24% and 8% respectively.

b) Production of the Domestic Industry

Capacity	Unit	2001-02	2002-03	2003-04	Jan-Dec' 04
Domestic industry	MT	510	510	870	870

Production	Unit	2001-02	2002-03	2003-04	Jan-Dec' 04
Domestic industry	MT	173.19	189.07	210.09	243.88
Trend	Indexed	100	109	121	140

Capacity Utilization	Unit	2001-02	2002-03	2003-04	Jan-Dec' 04
Domestic industry	%	33.96	37.04	24.15	28.03
Trend	Indexed	100	109	71	82

82. The domestic industry has alleged that dumping from China had been continuously taking place since many years. The industry, therefore, have been under

severe pressure to compete with the dumped imports and many of the units were unable to survive and had to close down. The Authority notes that some other producers have stopped production of saccharin though their plants have not been diverted to production of any other material. Some of the manufacturers are producing very small quantity of saccharin as compared to their production capacity. M/s Vishnu Chemicals Ltd. which was earlier manufacturing other chemicals such as Sodium Bichromate, Basic Chromium Sulphate has set up a capacity of 360 MT during POI. Estimate of Indian manufacturing capacity shows that it was 1160 MT during 2001-02 and 2002-03, however, by addition of capacity by M/s Vishnu Chemicals it increased to 1560 MT during POI. For the purpose of injury analysis the Authority has taken into account data of six manufacturers and it shows capacity was 510 MT in 2001-02 and 2002-03 which changed in 2003-04 and during POI by addition of capacity of 360 MT by M/s Vishnu Chemicals Ltd.

83. The data of DI on production of saccharin shows that production during POI had increased from 173.72 MT in 2001-02 to 243.88 MT during POI. (excluding Vishnu Chemicals it was 186.01 MT during POI) On year to year basis it increased by 8.73% in 2002-03 and grew by 21.17% in 2003-04 and 40.39% during POI. (excluding M/s Vishnu Chemicals it grew by 19% in 2003-04 and 7% during POI.)

84. Details of capacity utilisation shows that it increased from 34.06% in 2001-02 to 37.04% in 2002-03 and declined to 24.20% in 2003-04 and 28.03% during POI. (excluding M/s Vishnu Chemicals the capacity utilisation was 40.65% in 2003-04 and 36.47% during POI) The data indicates that the robust growth in demand of the subject goods had not benefited the domestic industry as it could not increase capacity utilisation commensurate with growth in demand.

c) Sales of Domestic Industry

Domestic Sales	Unit	2001-02	2002-03	2003-04	Jan-Dec' 04
Domestic industry	MT	171.81	184.79	199.10	250.07
Trend	Indexed	100	108	116	146

85. The data on sales shows the domestic sales quantity increased from 171.81 MT in 2001-02 to 250.07 MT during POI (excluding M/s Vishnu Chemicals sales increased to 194.18 MT during POI). The average inventory stock shows that it was equivalent to 7 days of sales in 2001-02 and it increased to 25 days in 2003-04. It was 21 days during POI. (excluding Vishnu Chemicals it was 11 days in 2003-04 and 6 days during POI).

86. Despite the growth in demand by 55% during POI and available capacity, the domestic industry could not increase their capacity utilization commensurate with growth in demand rather their average inventory increased considerably showing difficulties of producers in selling their product in the market conditions where dumped materials were available at cheap prices.

d) Demand and Market Share

Share in Demand	Unit	2001-02	2002-03	2003-04	Jan-Dec' 04
Imports from China	%	81.48	82.83	87.93	86.33

Trend	Indexed	100	101.64	107.91	105.95
Other Countries	%	1.02	2.82	0.25	0.29
Domestic industry	%	12.28	11.39	9.88	11.53
Trend	Indexed	100	93	80	94
Other Producers	%	5.22	2.96	1.93	1.84

87. The data shows that growth in demand during POI was 55% as compared to the base year. The share in demand from subject country was quite significant during the base year, however, it kept on increasing and rose by 8% in 2003-04 and 6% during POI as compared to base year. The share in demand from other countries was insignificant during base year and declined to miniscule 30% of the base year during POI. The share in demand of the domestic industry kept on declining from base year till 2003-04 however it rose to 11.53% to POI because of sales made by new manufacturer M/s Vishnu Chemicals. Similarly, the share of the other domestic producers kept on declining consistently and declined to 1.84% during POI. The analysis shows that the exporters from the subject country not only took advantage of growth in demand rather they captured the market share of other exporters and domestic industry, consequently the other exporters had been reduced to insignificant players.

(B) Price Effect of the Dumped imports on the Domestic Industry

88. The impact on the prices of the domestic industry on account of the dumped imports from the subject country has been examined with reference to the price undercutting, price underselling, price suppression and price depression, if any. For the purpose of this analysis the weighted average cost of production, weighted average Net Sales Realization (NSR) and the Non-injurious Price (NIP) of the Domestic industry (worked out after normating the costing information of the Domestic Industry) have been compared with the landed cost of imports from the subject country.

(i) Evaluation of price over Period of Investigation

Export Price	Unit	2001-02	2002-03	2003-04	Jan-Dec' 04
China	Rs./Kg	106.78	106.27	113.17	107.75
Trend	Indexed	100.00	99.52	105.99	100.91
Other Import	Rs./Kg	411.81	97.13	259.97	309.60

89. The data on prices reveal that prices from subject country had not changed much from base year to POI. However, these prices were very low as compared to prices from other countries. The prices from subject country were in the range of 25%-45% of the prices from the other countries. Though the imports from other countries constitute very small quantity, however, 24 transactions from 4 different countries indicate the price difference between subject country and other countries.

(ii) Price undercutting and underselling effects

	Unit	2001-02	2002-03	2003-04	Jan-Dec' 04
--	------	---------	---------	---------	-------------

Cost of Production					
Domestic Industry	Rs./kg.	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	96	93	97
Selling Price					
Domestic Industry	Rs./kg.	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	96	95	86
Profit/ Loss					
Domestic Industry	Rs./kg.	***	***	***	***
Trend	Indexed	-100	-105	-70	-236
Profit/ Loss on Domestic sales					
Domestic Industry	Rs./Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	-100	-113	-81	-343
Cash Profit					
Domestic Industry	Rs. Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	-100	-126	-74	-422
Net Sales Realisation Value (NSR x Sales)	Rs. Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	103	111	125
Landed value					
Customs Duty		35%	30%	25%	20%
China	Rs./kg.				130.59
Price Undercutting					***
Price Undercutting Range	%				30-40%
NIP	Rs/Kg				***
Price underselling	Rs/Kg				***
Price underselling Range	%				45-55%

90. Selling price (Net Sales Realisation) of the domestic industry shows decline to 86% of the base year during the period of investigation as compared to the cost of production which declined to 97% of the base year during POI.

91. Price undercutting has been determined by comparing the weighted average landed value of dumped imports from the subject country over the entire period of investigation with the weighted average net sales realization of the domestic industry for the same period. For this purpose landed value of imports has been calculated by adding 1% handling charge and applicable basic customs duty to the value reported in the DGCI&S data of export prices from the subject country.

92. In determining the net sales realization of the domestic industry, the rebates, discounts and commissions offered by the domestic industry and the central excise duty paid have been rebated.

93. For the purpose of price underselling determination the weighted average landed prices of imports from subject country have been compared with the Non-injurious selling price of the domestic industry determined for the POI.

94. The Authority notes that Imports from the subject country have been significantly below the net sales realization of the domestic industry as well as the non-injurious price estimated for the domestic industry thus resulting in significant price undercutting and underselling. Price undercutting is in the range of 30-40% and price underselling is in the range of 40-50% during POI.

(iii) Price suppression and depression effects of the dumped imports

95. The price suppression effect of the dumped imports has also been examined with reference to the cost of production, net sales realization and the landed values from the subject country.

96. The trend of cost of production shows that cost of production declined to 97% of the base year whereas the selling price declined to 86% of the base year during POI. As imports from subject country were coming at significantly low prices since many years, therefore, selling prices were already depressed. However, the undercutting in the range of 30%-40% during POI further suppressed the prices whereby selling prices declined to 86% of the base year as compared to the cost of production which declined to 97% of the base year during POI.

E.3 Examination of other Injury Parameters

97. After having examined the effect of dumped imports on the volumes and prices of the domestic industry and major injury indicators like volume and value of imports, capacity, output, capacity utilization and sales of the domestic industry as well as demand pattern with market shares of various segments in the earlier section, other economic parameters which could indicate existence of injury to the domestic industry have been analysed hereunder as follows:

i) Growth

Growth(Year to Year basis)	Unit	2001-02	2002-03	2003-04	Jan-Dec' 04
Growth in Sales	%	-	7.56	7.74	25.60
Growth in Demand	%	-	15.95	24.25	7.58
Growth in Mkt Share of DI	%	-	-7.23	-13.29	16.75
Growth in Production	%	-	9.16	11.12	16.08
Growth in Avg. Stocks	%	-	85.88	128.50	2.79

98. Growth measured on year to year basis shows that demand had been rising consistently. The imports also show consistent growth. Production, sales and average inventory shows rising trend. Market share of domestic industry was negative till 2003-04, however, it turned positive in POI.

Productivity

Employment (Number of employees)	Unit	2001-02	2002-03	2003-04	Jan-Dec' 04
Domestic Industry	Nos.	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	100	122	118

Salary & Wages DI	Unit	2001-02	2002-03	2003-04	Jan-Dec' 04
Domestic Industry	Rs. Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	89	95	106

Productivity (Production per employee)	Unit	2001-02	2002-03	2003-04	Jan-Dec' 04
Domestic Industry	Mt	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	109	100	120

99. The data on employment shows that the number of employees had risen by 18% during POI as compared to base year. The salary and wages of domestic industry had been declining from base year till 2003-04, however, it increased by 6% during POI from base year because of commencement of production by M/s Vishnu Chemicals. The productivity which is measured as production of subject goods per employee, shows rising trend. It was 20% higher during POI as compared to base year.

ii) **Profits and actual and potential effects on the cash flow**

	Unit	2001-02	2002-03	2003-04	Jan-Dec' 04
Cost of Production					
Domestic Industry	Rs./kg.	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	96	93	97
Selling Price					
Domestic Industry	Rs./kg.	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	96	95	86
Profit/ Loss					
Domestic Industry	Rs./kg.	***	***	***	***
Trend	Indexed	-100	-105	-70	-236
Profit/ Loss on domestic sales					
Domestic Industry	Rs./Lacs	***	***	***	***
Trend	indexed	-100	-113	-81	-343
Cash Profit					
Domestic Industry	Rs. Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	-100	-126	-74	-422

100. The data indicates the cost of production had been declining from base year to POI. It declined to 97% of the base year during POI. The selling price had been

showing declining trend, however, the decline in selling price is more pronounced as compared to the decline in cost of production. The selling price declined to 86% of the base year during POI. The losses per unit increased by 136% during POI as compared to base year. (excluding Vishnu Chemicals the losses increased by 41% during POI as compared to base year) Similarly, the losses on domestic sales had been rising and increased by 243% during POI as compared to base year. (excluding Vishnu Chemicals the losses increased by 59%). The cash (losses) increased by 322% during POI as compared to the base year. (excluding Vishnu Chemicals the cash losses increased by 81% during POI as compared to base year)

iii) Employment and wages

Employment (Number of employees)	Unit	2001-02	2002-03	2003-04	Jan-Dec' 04
Domestic Industry	Nos.	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	100	122	118
Salary & Wages DI					
Domestic Industry	Rs. Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	89	95	106

101. The data on employment shows that the number of employees had been increased by 18% during POI as compared to base year. The salary and wages of domestic industry had increased by 6% during POI as compared to base year.

iv) Return on investment and ability to raise capital

	Unit	2001-02	2002-03	2003-04	Jan-Dec' 04
Net Fixed Assets (for Product)					
Domestic Industry	Rs. Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	117	516	521
Capital Employed (for Product)					
Domestic Industry	Rs. Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	98	248	269
Return on Capital Employed					
Domestic Industry	%	***	***	***	***
Trend	Indexed	-100	-124	-34	-168

102. The above data shows that the net fixed assets of the company for this product had changed significantly during POI because of investment by M/s Vishnu Chemicals. The return on net capital employed declined to -168 (indexed) from the base of - 100 in the base year.

v) **Investment**

103. The authority notes that the capacity of the domestic industry has changed during POI. M/s Vishnu Chemicals which was earlier manufacturing chemicals such as Sodium Bichromate and basic chromium sulphate has set up new capacity by making fresh investment.

vi) **Magnitude of Dumping**

104. Magnitude of dumping as an indicator of the extent to which the dumped imports can injure the domestic industry shows that the dumping margin determined against the subject country named, for the POI, is significant.

vii) **Factors affecting prices**

105. Change in cost structure if any, competition in the domestic industry and prices of competing substitutes have been examined for analyzing the factors other than dumped imports that might be affecting the prices in the domestic market. The cost of production declined to 97% of the base year during POI. The export price from China increased by 6% during 2003-04 before declining and it was 1% higher during POI as compared to base year. The custom duty declined from 35% in base year to 20% during POI. Consequently, landed value of imports from China declined to 90% during POI as compared to base year. However, the selling price declined to 86% of the base year during POI. The Authority notes that Landed values of imported material from subject country was significantly below the selling price of the domestic industry, causing severe price undercutting in the Indian market.

viii) **Inventories**

	Unit	2001-02	2002-03	2003-04	Jan-Dec' 04
Average Stock					
Domestic Industry	MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	189	425	437
Number of days of sales in stock					
Domestic Industry	Days	7	12	25	21

106. The data indicates that the inventory of the domestic industry had been consistently rising from base year to POI. It increased by 337% during POI as compared to base year. Translated in to number of days of sales it was equivalent to 7 days in 2001-02 and it increased to 21 days during POI.

E.4 Other Known factors and Causal Link

107. The Authority has also examined the issue of causal link and other non-attribution factors as laid down in the Rules to segregate injury if any caused by other factors. In this regard the following indicative factors as laid down in the Rules have been examined.

5561/2007-8

i) Volume and prices of imports from other sources

108. The Authority notes that the volume of imports from other country is insignificant. Imports from the subject country is having share of 99.7% of total imports during Period of Investigation. Thus, imports from other countries have not contributed to the injury to the domestic industry.

ii) Contraction in demand and / or change in pattern of consumption

109. The subject goods have shown consistent growth during the injury period. The total demand of subject goods have shown growth of 55% during Period of Investigation as compared to the base year. There is also no significant change in consumption pattern of the product in the domestic market which could be attributed to the injury to the domestic industry.

iii) Trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers

110. The Authority notes that there is no restrictive practice prevalent in the industry which could be attributed to the injury to the domestic industry.

iv) Development of technology

111. The Authority notes that technology for production of the product has not undergone any change. Development of any other technology, therefore, cannot be attributed to the injury to the domestic industry.

v) Export performance

112. The Authority notes that there was no exports made by the domestic industry, therefore, this factor is not attributable to the injury to the domestic industry.

vi) Productivity of the Domestic Industry

113. Productivity of the domestic industry in terms of production per employee has shown significant improvement during POI. Therefore, productivity is not a factor which can be attributed to the injury of the domestic industry.

114. No other factor which could have possibly caused injury to the domestic industry has been brought to the knowledge of Authority.

E.5 Conclusion on injury parameters

115. The growth in demand of subject goods shows rising trend. As compared to base year it rose by 55% during POI. The production and sales of domestic industry rose during POI basically because of new entrant M/s Vishnu Chemicals which set up capacity in 2003-04 and started production during POI. The share in demand of the domestic industry increased during POI. However, domestic industry as a whole could not take benefit of rising demand of product. M/s Vishnu Chemicals was in a position to sell product at losses and by benchmarking same against prices of imported product.

The rising inventory indicates difficulty of the domestic industry in selling subject goods in the market in view of dumped goods. The production of domestic industry had increased during POI, however capacity utilization remained at sub-optimal level at around 30%. The cost of production during POI declined to 97% as compared to base year but selling price declined to 86% of the base year. Despite depression of prices because of continuous dumping, the prices were suppressed further because of undercutting in the range of 30-40% during POI. The financial situation of the domestic industry which was facing losses during the base year further deteriorated because of the dumping and severe undercutting adversely impacting the cash flow and ROI. The analysis of economic parameters indicate significant decline in financial performance and material injury to the domestic industry.

116. The foregoing analysis indicates that there were significant differences in the prices of the domestic industry and the exporter from the subject country. Even when the domestic industry were selling the product by incurring losses they were still facing significant undercutting from dumped imports. This resulted in increase in volume of dumped imports, in absolute term in relation to production. Existence of undercutting and the level of prices at which domestic producer was forced to sell directly impacted on their financial situation and consequently impacting the cash flow and return on investment of the domestic industry. On the basis of the above examination it is concluded that the subject goods exported from the subject country are at prices far below their normal value, Non Injurious Price of the domestic industry and the average sales realization of the subject goods of the applicants, and the dumping, injury and causal links have been clearly established

E.6. Magnitude of Injury Margin

117. The non-injurious price determined by the Authority has been compared with the landed value of the exports for determination of injury margin. The injury margins have been worked out as follows:

Injury Margin

Name of company	Injury Margin
M/s Shanghai Fortune Chemical Co. Ltd. and M/s Majestic International Trading Co. Ltd.	US\$ *** per MT
M/s Shanghai Fortune Chemical Co. Ltd.	US\$ *** per MT
M/s Kaifeng Xinghua Fine Chemical Factory	US\$ *** per MT
M/s Tianjin Changjie Chemical Co. Ltd	US\$ *** per MT
Others from China PR	US\$ *** per MT

F. Indian Industry's interest & Other Issues

118. The purpose of anti dumping duties in general is to eliminate dumping which is causing injury to the domestic industry and to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market which is in the general interest of the country.

119. The Authority recognizes that the imposition of anti dumping duties might affect the price levels of the subject goods or the products manufactured using subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products. However, fair competition on the Indian market will not be reduced by the anti dumping measures. On the contrary, imposition of anti dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of subject goods. With a view to minimize the impact on the downstream industry, the Authority has considered it appropriate to recommend anti dumping duty based on the lower of the dumping and injury margins. The Authority notes that the imposition of anti dumping measures would not restrict imports from subject country in any way, and therefore, would not affect the availability of the product to the consumers.

G. Conclusions

120. The Authority has, after considering the foregoing, come to the conclusion that:

- a) The subject goods have been exported to India from the subject country below its normal value;
- b) The domestic industry has suffered material injury;
- c) The injury has been caused by the dumped imports from subject country.

H. Recommendations

121. It is considered necessary to impose definitive anti-dumping duty on the imports of subject goods. Accordingly, the Authority recommends imposition of anti dumping duty on the imports of Saccharin.

122. It is decided to recommend the amount of anti-dumping duty equal to the margin of dumping or less, which if levied, would remove the injury to the domestic industry. The landed price of imports was also compared with the non-injurious price of the domestic industry, determined for the period of investigation. In this case dumping margin is less than injury margin, accordingly, anti-dumping duty equal to the amount indicated in Col 8 of the table below is recommended to be imposed by the Central Government. on all imports of subject goods originating in or exported from the subject country.

Duty Table

Sl No	Sub-Heading Or Tariff Item	Description of Goods	Country of Origin	Country of Export	Producer	Exporter	Amount	Unit of Measurement	Currency
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)

1.	29251100 or Any other Head of Customs	Saccharin	China PR	China PR	Shanghai Fortune Chemicals Co. Ltd., China	Majestic International Trading Co. Ltd.	717.21	MT	USD
2.	Do	Do	China PR	China PR	Shanghai Fortune Chemicals Co. Ltd., China	Any	807.77	MT	USD
3.	Do	Do	China PR	China PR	Kaifeng Xinghua Fine Chemical Factory	Any	1093.28	MT	USD
4.	Do	Do	China PR	China PR	Tianjin Changjie Chemical Co. Ltd.	Any	1127.67	MT	USD
5.	Do	Do	China PR	China PR	Any	Any	2151.33	MT	USD
6.	Do	Do	China PR	Any country other than China PR	Any	Any	2151.33	MT	USD
7.	Do	Do	Any country other than China PR	China PR	Any	Any	2151.33	MT	USD

123. Landed value of imports for the purpose shall be the assessable value as determined by Customs under the Customs Act, 1962 and all duties of customs except duties levied under Sections 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the Customs Tariff Act, 1975.

124. Subject to the above, the Authority confirms the preliminary findings dated 1st April 2006.

125. An appeal against this order shall lie before the Customs, Excise and Service Tax Appellate Tribunal in accordance with the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 and Customs Tariff Rules, 1995.

CHRISTY L. FERNANDEZ, Designated Authority